
चन्दामामा
दीपावली विशेषांक
75



युधिष्ठिर को आता देख कौरव सेना में कई ने हाहाकार किया। कई चुप रहे। कई और ने कहा-"देखा! युधिष्ठिर डर गया है। अपने प्राण और अपने भाइयों के प्राणों की रक्षा करने के लिए भीष्म से प्रार्थना करने आया है। जिसके ऐसे भाई हो और वह ऐसा डरता हो ऐसा क्षत्रिय कहीं देखा है? जब आखिर मैदान में उतरे तो पैर ढीले पड़ गये।" उनमें से कई ने यहाँ तक कि छी छी करके दुत्कारा भी।

इतने में युधिष्ठिर ने अपने भाइयों के साथ कौरव सेना में प्रवेश किया। भीष्म के पास जाकर उनके पैरों पर पड़कर कहा-"दादा, हमें तुम से, जिसे कोई भी जीत नहीं पाया है, युद्ध करना पड़ रहा है। इसके लिए अपनी अनुमति दो। हमें अपना आशीर्वाद दो।"

यह सुन भीष्म ने कहा-"बेटा, तुम्हें इस तरह आकर मेरे आशीर्वाद माँगते देख मुझे बहुत सन्तोष हो रहा है। क्योंकि मैंने कौरवों का नमक खाया है, इसलिए मुझे उनकी तरफ से लड़ना पड़ रहा है। तुम युद्ध करो, विजय तुम्हारी होगी। अगर तुम मुझ से कोई वर चाहते हो, तो माँगो।"

"दादा, हमेशा हमारे भले की सोचना। हमें हमेशा उचित परामर्श देते रहना। मुझे तुम्हारे युद्ध करने पर कोई आपत्ति नहीं है।" युधिष्ठिर ने कहा।

"बेटा, किस बात पर मेरी सलाह चाहते हो?" भीष्म ने पूछा।

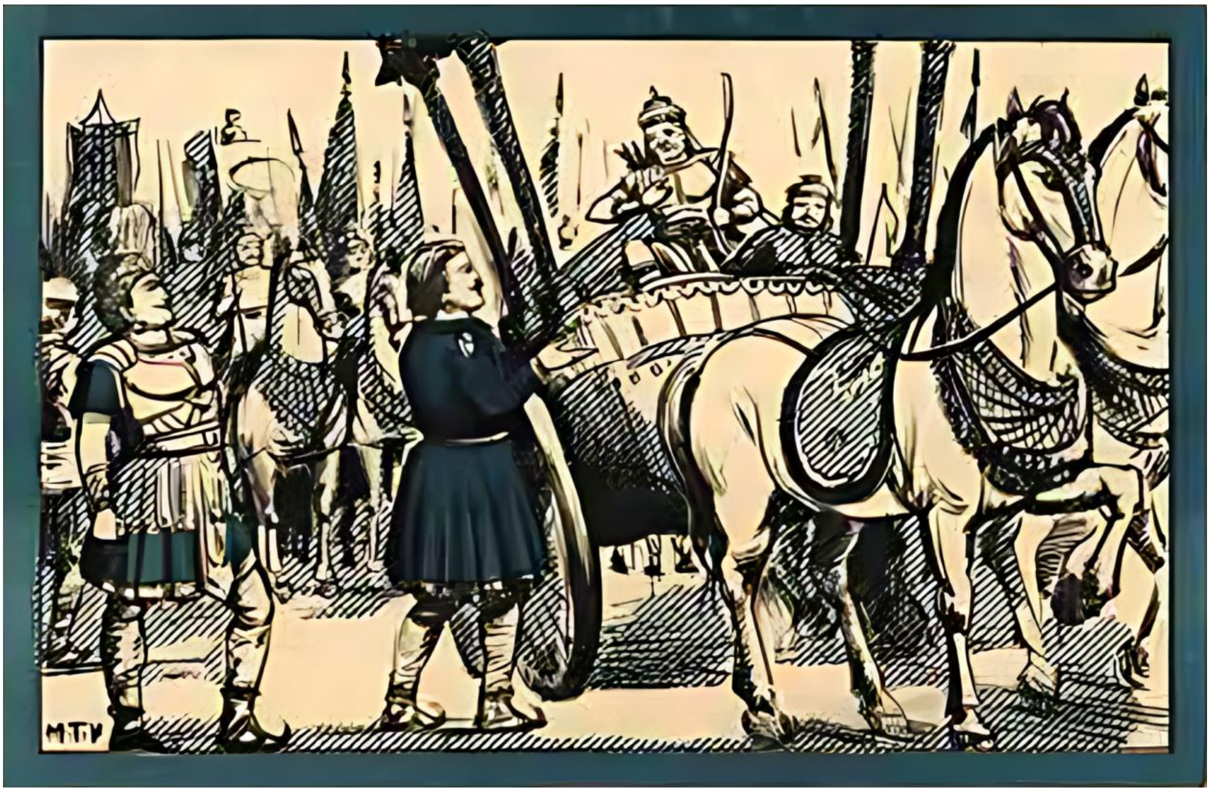
"दादा, तुम तो किसी से पराजित किये नहीं जा सकते। तुमको पराजित करने के लिए हमें क्या करना होगा?" युधिष्ठिर ने पूछा। "युधिष्ठिर, मुझे नहीं मालूम युद्ध में मुझे कौन मार सकता है? फिर कभी मिलेंगे।" भीष्म ने कहा।

युधिष्ठिर, भीष्म को नमस्कार करके, उनसे विदा लेकर भाइयों के साथ द्रोण के पास गया। उनको नमस्कार करके उसने कहा- "आचार्य! गुरु की अनुमति के बिना युद्ध करना अनुचित होगा। अतः मुझे अनुमति दीजिये।"

द्रोण ने भी भीष्म की तरह युद्ध करने के लिए कहा और आशीर्वाद दिया कि उसकी विजय हो।

"युद्ध में सहायता के अतिरिक्त चाहे कुछ भी माँगो, देने के लिए तैयार हूँ।" द्रोण ने कहा। युधिष्ठिर ने विजय के लिए आशीर्वाद माँगा। द्रोण ने आशीर्वाद दिया। फिर युधिष्ठिर ने द्रोण से पूछा-"कोई ऐसा उपाय बताइये, जिससे आपको पराजित किया जा सके।"

"जब तक मैं शस्त्रों से सन्नद्ध रहूँगा, तब तक मुझे कोई नहीं हरा सकता। मुझे





तभी मारा जा सकता है, जब मैं उन्हें छोड़ दूँगा। युद्ध में यदि मुझे कोई दुःख समाचार मिला तो मैं अस्त्र शस्त्र छोड़ दूँगा। किसी और परिस्थिति में मैं शस्त्र नहीं छोड़ूँगा।" द्रोण ने कहा।

फिर युधिष्ठिर कृपा और शल्य के पास गया। उनको नमस्कार किया। युद्ध के लिए उनकी भी अनुमति माँगी। उनसे भी आशीर्वाद माँगा कि युद्ध में उसकी विजय हो। अपने मामा शल्य से कहा-"मामा, कर्ण को मारने के लिए हमें तुम्हारी सहायता की आबश्यकता होगी।" शल्य ने सहायता करने का वचन दिया।

इस बीच, कृष्ण ने कर्ण के पास जाकर कहा-"कर्ण, सुना है कि तुमने प्रतिज्ञा की है कि जब तक भीष्म जीवित रहेगा तब तक तुम युद्ध न करोगे। तब तक पाण्डवों की तरफ से क्यों नहीं युद्ध करते? बाद में कौरवों में जा मिलना।"

यह सुन कर्ण ने कृष्ण से कहा-"कृष्ण, मैं दुर्योधन के लिए प्राण त्याग करने के लिए उद्यत हूँ। तेरा कहना मानकर, तुम सोचते हो, मैं उसका अपकार करूँगा?"

जिन जिन को नमस्कार करना था, उनको नमस्कार करके, जिन जिन का आशीर्वाद लेना था, उनका आशीर्वाद लेकर, वापस आते हुए दोनों सेनाओं के बीच में युधिष्ठिर रुका। पीछे मुड़कर उसने कौरव पक्ष के योद्धाओं से कहा-"सैनिको! यदि आप में से कोई हमारी तरफ से लड़ना चाहता है, तो मैं उसको हमारे साथ आने के लिए सहर्ष निमन्त्रित करता हूँ।

कौरव सेना में सम्मिलित युयुत्सु ने युधिष्ठिर से कहा-"राजन्! अगर आप हमें

चाहते हैं, तो मैं आपकी तरफ आकर कौरवों से लड़ूँगा।" यह युयुत्सु भी धृतराष्ट्र के लड़कों में से एक था। इसकी माँ एक वैश्य स्त्री थी।



युधिष्ठिर ने आदर पूर्वक कहा- "आओ, युयुत्सु! तुम्हारे मूर्ख भाइयों के साथ हम सब मिलकर लड़ें। दुर्योधन आदि को पितरों का श्राद्ध करने का अधिकार नहीं है। कम से कम तुम करना।"

तुरन्त युयुत्सु पाण्डवों की तरफ आ गया। धर्मराज ने अपने रथ के पास पहुँचकर कवच धारण किया। सर्व सेनापति धृष्टधुम्न ने एक बार देखा कि सब पाण्डव अपने अपने रथों में युद्ध के लिए सन्नद्ध हैं कि नहीं। फिर दोनों पक्षों से शंख और भेरी का तुमुल घोष हुआ।

युद्ध आरम्भ हो गया। महाभयङ्कर महाभारत युद्ध में पहला आक्रमण भीम ने किया और अन्त का आक्रमण भी पाण्डव सेना के सब से आगे भीम खड़ा था। वह मेघ की तरह गरजा, और विद्‌युत की तरह कौरव सेना पर टूट पड़ा। दुर्योधन, दुश्शासन, आदि उसका सामना करने गये। पाण्डवों की तरफ से उपपाण्डव, अभिमन्यु, नकुल, सहदेव, धृष्टधुम्न आदि, दुश्शासन आदि के मुकाबले में अपनी वाण विद्या प्रदर्शित करने लगे। तुरन्त दोनों तरफ के योद्धा एक दूसरे से लड़ने लगे। मर कटने लगे।

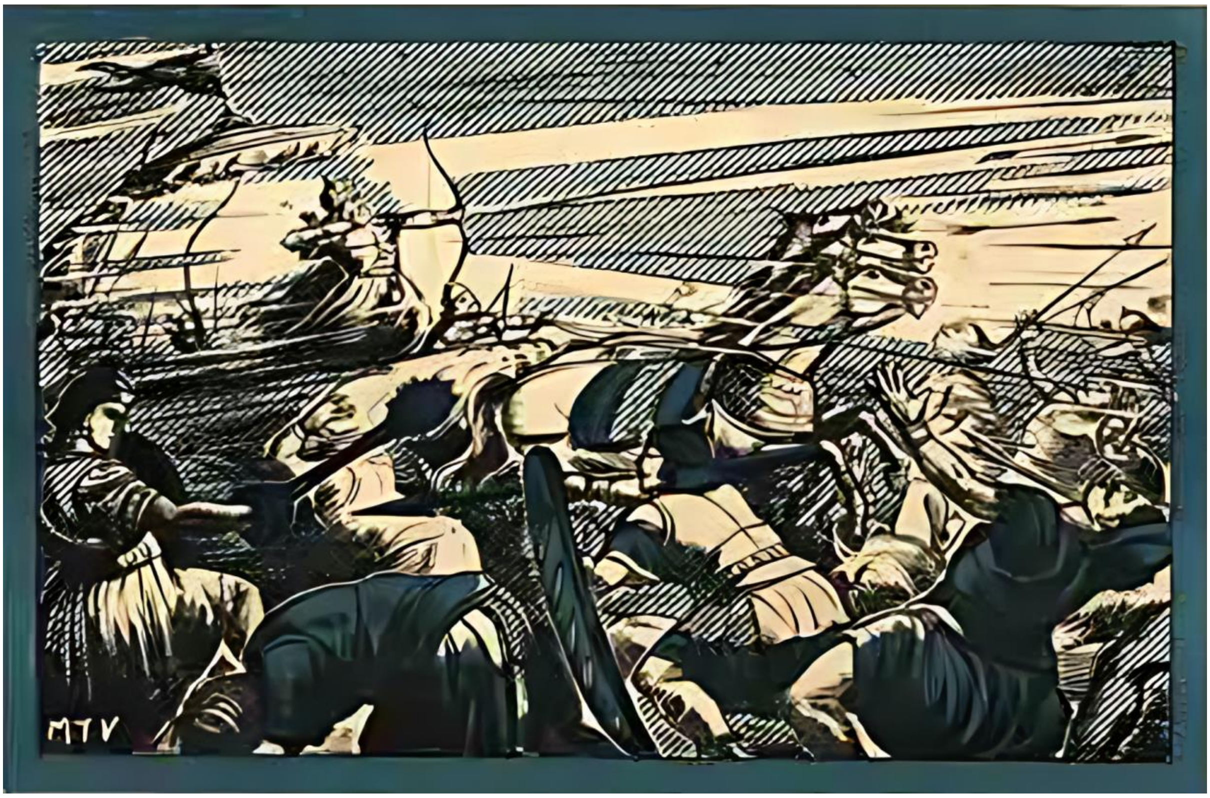
एक तरफ से भीष्म और दूसरी तरफ से अर्जुन, शत्रु-सेनाओं का संहार करते एक दूसरे के सामने आये। उन दोनों में भयङ्कर युद्ध होने लगा।

इस तरह सारी सेना में द्वन्द्व-युद्ध हो रहा था। कृतवर्मा से सात्यकी, कोशल के राजा बृहद्वीप से अभिमन्यु, दुर्योधन से भीम

दुश्शासन से नकुल, दुर्मुख से सहदेव, शल्य से युधिष्ठिर, द्रोण से धृष्टद्युम्न, अलम्बस से घटोत्कच, अश्वत्थामा से शिखण्ड़ी, सैन्धव से प्रुमद, विकर्ण से भीम का पुत्र, शत्रु सोम, शकुनि से युधिष्ठिर का लड़का; इस तरह कई द्वन्द्व-युद्ध एक साथ एक ही मैदान में हो रहे थे। इन युद्धों में कोई भी योद्धा नहीं मारा गया। परन्तु कितनी ही पताकायें छूट गईं, कितने ही रथ टूट गये। कितने ही घोड़े मारे गये। सारथी मारे गये। कितने ही योद्धा घायल हुए।

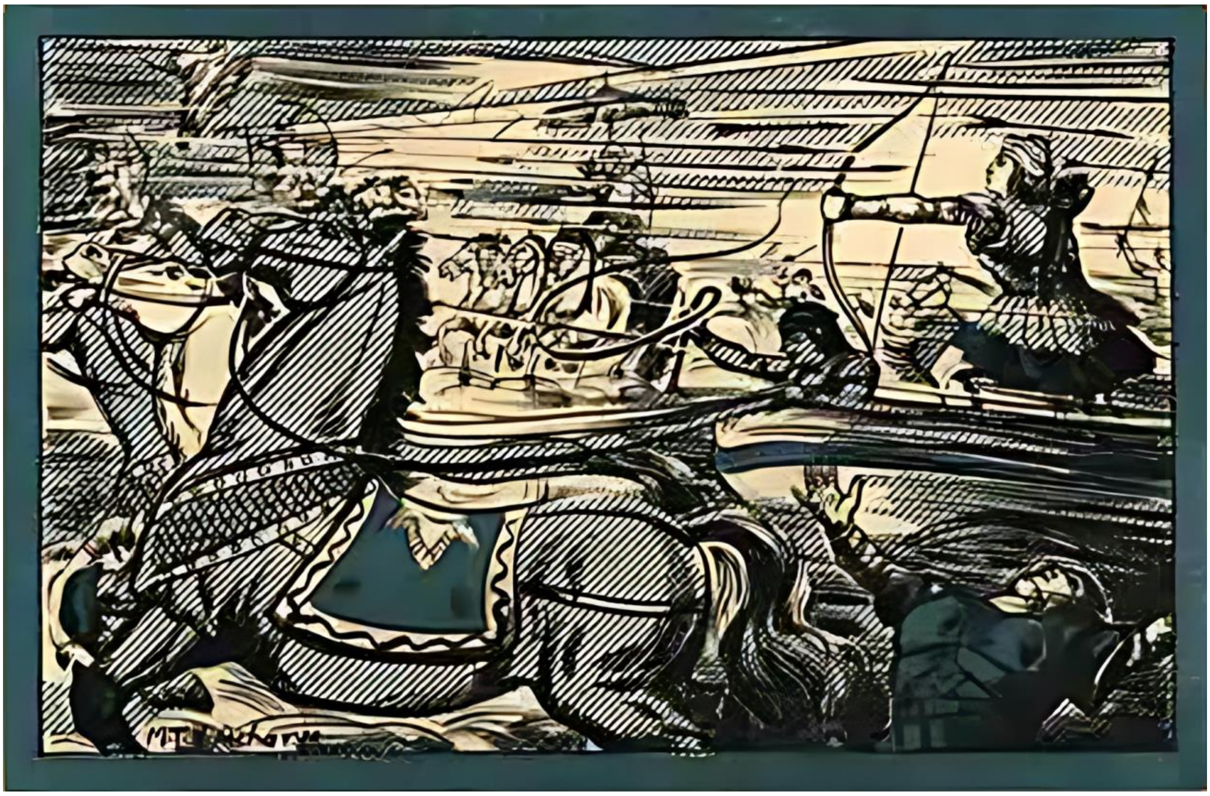
इन द्वन्द्व युद्धों के साथ साधारण युद्ध भी चला। इस युद्ध में असंख्य सैनिक, घोड़े, हाथी मारे गये।

दुपहर होने को थी कि भीष्म ने यम की तरह पाण्डव सेना पर आक्रमण किया। उसकी रक्षा के लिए दुर्योधन ने दुर्मुख, कृतवर्मा, कृपा और शल्य आदि को नियुक्त किया। पाण्डव सेना का संहार करते भीष्म को देखकर अभिमन्यु उसका सामना करने गया। उसके रथ पर कर्णिकार वृक्ष के निशानवाला झण्डा फहरा रहा था।



अभिमन्यु ने भीष्म के सामने आते ही उन पर और उनके साथियों पर शर परम्परा का प्रयोग किया। भीष्म के शरीर में नौ बाण घुस गये। कृपा के हाथ का बाण टूट कर गिर गया। दुर्योधन का झण्डा उखड़ गया। एक और चोट से उसके हाथी का सिर कट गया। अभिमन्यु को इस प्रकार युद्ध करता देख सबको सहसा अर्जुन स्मरण हो आया। भीष्म ने अभिमन्यु को पीछे हटाने का बहुत प्रयत्न किया। परन्तु अभिमन्यु उसके प्रति बाण को काटता गया। आखिर उसने उसके ताड़ के पेड़ के झण्डे को ही तोड़ दिया। यह देख भीम ने आनन्दित हो सिंहनाद किया।

इतने में विराट, उसके लड़के सात्यकी, धृष्टद्‌यु आदि आकर कौरवों का मुकाबला करने लगे। इस लड़ाई में उत्तर, शल्य पर लपका। तब वह एक हाथी पर सवार था। वह हाथी, शल्य के रथ की ओर झपटा। उसके रथ के चारों घोड़ों को मार दिया। शल्य ने रथ से बिना उतरे ही, बहुत भयङ्कर शक्ति का उत्तर पर प्रयोग किया। शक्ति उत्तर के कवच के अन्दर गई और वह तुरन्त बेहोश हो गया।



उत्तर के हाथ से अंकुश गिर गया, वह हाथी पर से गिर गया। इस बीच शल्य, कृतवर्मा के रथ पर चढ़ गया।

शल्य से जब उसका भाई घायल कर दिया गया, तो विराट के एक और लड़के श्वेत ने कोपावेश में, अकेले सात कौरव योद्धाओं पर चढ़ाई कर दी। वह शत्रुओं से खूब लड़ा। उसने उनके बाण तोड़ दिये। उन्होंने जो सात शक्तियाँ उस पर छोड़ीं, उन सबको उसने अपने बाणों द्वारा काट दिया। शकुनि के लड़के, रुक्म रथ को उसने एक बाण से बेहोश कर दिया और शल्य के रथ पर शेर की तरह चढ़ गया। उस दिन शल्य मारा जाता यदि समय पर दुर्योधन, भीष्म आदियों के साथ आकर उसकी मदद न करता। शल्य प्राण बचाकर पीछे चला गया।

श्वेत का कोप इतने से शान्त न हुआ। वह उन्मत्त की तरह लड़ता रहा। कौरव सेना को, सैकड़ों, सहस्रों की संख्या में मारने लगा। वे उसके आक्रमण को न रोक सके। कौरव योद्धाओं ने जाकर भीष्म से कहा-"वीरशिरोमणि, हममें श्वेत का मुकाबला करने का साहस नहीं है।"

यह सुन भीष्म, श्वेत की ओर गया और पाण्डव सेना का संहार करने लगा।

आखिर, भीष्म और श्वेत आमने सामने आये। उन दोनों में घोर महायुद्ध हुआ। यदि उस समय श्वेत सामने न आता तो न मालुम कितनी पाण्डव सेना मारी जाती। दोनों ने एक दूसरे पर बाण पर बाण छोड़े। आखिर भीष्म थक कर पीछे हटा। पाण्डवों के आनन्द की और कौरवों के शोक की सीमा न रही।





एक गाँव में एक किसान था। उसका एक ही लड़का था। किसान का ख्याल था कि बड़ा होने पर उसका लड़का बड़ा अक्लमन्द बनेगा। लड़का भी यही सोचता कि हर रोज वह अधिक बुद्धिमान होता जा रहा था। पर पिता यह न सोचता था।

एक दिन किसान ने अपने लड़के से कहा-"तुम्हारी उम्र बीस साल की हो गई है। पर खास कामकाजी नहीं बने, तुम में तो अक्ल ही नज़र नहीं आती।"

"अगर अक्ल मुझमें नहीं है, तो किसमें है? मुझे क्या करने के लिए कहते हो? बताओ।" लड़के ने पूछा।

"हमारे घर में भेड़ की खाल है, उसे कल पेंठ में बेच आना, जरा तुम्हारी अक्ल तो देखें।" किसान ने कहा।

"पल भर में खाल बेचकर पैसा जो में ला दूँगा!" लड़के ने कहा।

"अरे पगले! खाल बेचकर पैसे लाने में क्या होशियारी है। वह तो कोई भी कर सकता है। अगर सचमुच तुम अक्लमन्द हो तो खाल भी लाओ और उसके दाम भी। समझे?" पिता ने कहा।

लड़के ने कहा-"अच्छा। कल शाम तक भेड़ की खाल लाऊँगा और साथ उसके दाम भी।"

अगले दिन सवेरे भेड़ की खाल लेकर वह पेंठ गया। वह पेंठ में घुसा ही था कि किसी ने पूछा-" क्या यह खाल बेचोगे? कितना लोगे?"

"चाहे कितने में ही दूँ, पर मुझे खाल चाहिए और उसके दाम भी।" किसान के लड़के ने कहा।

खाल खरीदनेवाले ने ठहाका मारकर कहा-"वाह! वाह! क्या सूझ है! खैर, किसी से पूछकर देखो कि कोई बिना खाल लिये इसके दाम देता है कि नहीं।" वह यह कह चला गया।

पेंठ में कई ने किसान के लड़के से खाल का दाम पूछा। सबसे उसने यही कहा। सब उसे देखकर हँसे और खाल खरीदे बिना ही चले गये।

दुपहर ढल गई। शाम होने जा रही थी। खाल न बिकी। घूमते-घूमते उसके पैर टूट से गये थे। वह एक ऐसी जगह पहुँचा, जहाँ भीड़ थी। उस भीड़ के बीच में कोई जादूगर जादू दिखा रहा था। किसान के लड़के को देखते ही उसने कहा-"भाई, जरा वह खाल देना, तुम्हें अच्छा जादू दिखाऊँगा।"

किसान के लड़के ने खाल दे दी। जादूगर ने खाल को जमीन पर रखा, उस पर अपना अङ्गोछा डाल दिया। फिर उसने सबको तालियाँ पीटने के लिए कहा। उसने अपना अङ्गोछा उठाया। उसके नीचे एक आम का पौधा था, उस पर एक आम भी था।



किसान के लड़के को बड़ा आश्चर्य हुआ। जब उसने अपनी भेड़ की खाल माँगने की सोची तो वह जादूगर कहीं गायब हो गया था। भीड़ भी इधर उधर चली गई थी।

किसान के लड़के को रोना-सा आ गया। उसने पिता को वचन दे रखा था कि वह खाल और उसके दाम, दोनों लाकर देगा। यहाँ दाम तो खैर मिला ही नहीं, खाल भी कोई लेकर चम्पत हो गया। अगर खाली हाथ गया तो यह सिद्ध हो जायेगा कि मैं निरा मूर्ख हूँ।

उसको बड़ी भूख भी लग रही थी। सामने के आम के पौधे पर आम दिखाई दे रहा था। उसे खाकर उसने अपनी भूख मिटानी चाही। उसने जो उसे पकड़ा तो आम अदृश्य हो गया और भेड़ की खाल दिखाई दी।

यही काफी है, यह सोचकर, वह भेड़ की खाल लपेट कर, बगल में रखकर घर की ओर चल पड़ा। सूर्यास्त होनेवाला था। थोड़ी दूर जाने के बाद उसे ऐसा लगा, जैसे कोई पीछे से बुला रहा हो। पीछे मुड़ने पर देखा तो वह वही जादूगर था।



जादूगर किसान के साथ आ मिला। उसके साथ-साथ चलते हुए उसने कहा-"तुम बहुत बुद्धिमान हो, तुम्हे एक सलाह देता हूँ, उसे कभी न भूलना।"

"क्या है वह सलाह?" किसान के लड़के ने पूछा।

"अगर रास्ते में कोई स्त्री दिखाई दे, तो उससे स्नेहपूर्वक कुशल प्रश्न पूछना।" जादूगर ने कहा।

थोड़ी दूर जान के बाद रास्ता फटा, जादूगर दूसरे रास्ते से चला गया। किसान का लड़का अपने गाँव की ओर चलता गया। अन्धेरा हो रहा था कि उसको एक नाला दिखाई दिया। उस नाले से थोड़ी दूर पर एक घर था। उस घर में से सोलह वर्ष की लड़की आकर नाले से घड़े में पानी भर रही थी।

किसान के लड़के को जादूगर की सलाह याद आई। "क्यों! क्या हालचाल है?" उसने उस लड़की से पूछा।

"आप सब ठीक हैं न?" उस लड़की ने पूछा।

बातचीत के सिलसिले में वह लड़की जान गई कि किसान के लड़के ने



सवेरे से कुछ न खाया था। वह उसे अपने घर ले गई। उसे जो की रोटी खिलाई। फिर उसने भेड़ की खाल के बारे में पूछा।

"इसे बेचकर, इसे और इसके दाम पिता ने घर लाने के लिए कहा और यह काम मुझसे न हो सका।" किसान के लड़के ने कहा।

"यही तो न? मैं तुम्हें भेड़ की खाल और उसके दाम भी दिये देती हूँ।" कहकर उस लड़की ने उस लड़के से भेड़ की खाल ले ली। उसपर जो कुछ बाल थे (ऊन) उन्हें काटकर, खाल और बालों के दाम किसान के लड़के को दे दिये। किसान का लड़का बड़ा खुश हुआ। वह उस लड़की से विदा लेकर घर आ गया। लड़के को खाल और उसके दाम लाया देखकर किसान बड़ा खुश हुआ-"तुझे किसने यह उपाय बताया था?" उसने पूछा।

"आदमी ने नहीं, औरत ने।" किसान के लड़के ने कहा।

फिर जो कुछ गुजरा था, उसने पिता को बता दिया।

"तो तेरी अक्ल बस इतनी ही है! अगर ऐसी लड़की रास्ते में मिली थी तो उससे शादी करके उसे घर जो ले आते!" किसान ने कहा।

किसान का लड़का झट नाले की ओर गया। और वहाँ जाकर उसने लड़की से पूछा-"मुझसे शादी करोगी?" वह लड़की हँसी। वह उससे शादी करने के लिए मान गई। दोनों साथ किसान के घर गये। किसान ने उनकी धूम-धाम से शादी की।





[१६]

[काँसे के किले तक पहुँचने के लिए रूद्रपुर के राजा शिवसिंह ने चन्द्रवर्मा की सहायता की। चन्द्रवर्मा चार राजकर्मचारियों और कुछ सैनिकों को लेकर पश्चिम दिशा की ओर निकल पड़ा। रास्ते में उन्हें एक नगर के अवशेष दिखाई दिये। वहाँ के एक शिलालेख द्वारा मालूम हुआ कि उस नगर का नाम करवीरपुर था। बाद में--]

करवीरपुर के खण्डहरों को पार करके पश्चिम दिशा की ओर कुछ दूर जाने के बाद चन्द्रवर्मा के रास्ते में ऊँचे पर्वत आये। उन पर्वतों को पार करना एक समस्या-सी हो गई। उस पर्वत प्रान्त में सब जगह रोड़े पत्थर थे। रसद ढोनेवाले खच्चरों के लिए पर्वत के उपरले भाग तक पहुँचना असम्भव था। रास्ता बहुत ही ऊबड़-खाबड़ था।

"जो जितनी रसद ढो सके वह उतनी पीठ पर लादकर चले, इसके सिवाय और कोई रास्ता नहीं है। हमें खच्चरों को इस जङ्गल में छोड़ देना होगा।" चन्द्रवर्मा ने कहा।

शिवसिंह के भेजे हुए चारों राज-कर्मचारियों ने इस पर आपत्ति उठाई। "पर्वतों के पार क्या है, हम नहीं जानते।



हो सकता है कि हमें वहाँ खाने की चीज़ न मिलें। उस हालत में, खच्चरों पर लदे बहुत-से खाद्य पदार्थ इस जङ्गल में छोड़कर, एक एक आदमी जितना हो सके उतना लेकर पर्वतों के उस पार जाना खतरनाक है। हमें यह बात अनुचित मालूम होती है।" उन्होंने कहा।

"इस पहाड़ पर चढ़ने के लिए कहीं पगडण्डी भी नहीं दिखाई देती। हमें ही रस्सियों के सहारे पहाड़ पर चढ़ना होगा। तब रस्सियों के सहारे खच्चरों को कैसे ऊपर ले जा सकेंगे? इसलिए इन स्वच्चरों को और कुछ रसद को इस जङ्गल में छोड़ना पड़ेगा।" चन्द्रवर्मा ने कहा।

चन्द्रवर्मा के सुझाव का सिवाय राज-कर्मचारियों के सबने समर्थन किया। तुरन्त स्वच्चरों पर से समान उतार दिया गया। उनमें से जो कोई जो कुछ हो सकता था उसने उसे ले लिया। उसे सिर और पीठ पर लाद कर वे पहाड़ पर एक के बाद एक धीमे धीमे चढ़ने लगे।

सवेरे सवेरे उन्होंने पहाड़ पर चढ़ना शुरू किया। ठीक दुपहर के समय वे पहाड़ पर एक ऐसी जगह पहुँचे जो कुछ समतल था। वहाँ उन्होंने भोजन पकाया, खाया, उसके बाद फिर वे पहाड़ पर चढ़ने लगे। शाम को सूर्यास्त से कुछ समय पहले वे पहाड़ की चोटी पर थके माँदे पहुँच सके।

सब से पहले चन्द्रवर्मा और देव चोटी पर पहुँचे। उनको जो दृश्य दिखाई दिया उसके कारण वे अत्यन्त आनन्दित हुए। पहाड़ के नीचे उन्हें एक महानगर दिखाई दिया। उस महानगर के ऊँचे बड़े मकानों पर सूर्य की किरणें इस तरह पड़ रही थीं कि उनकी आँखें चौधियों गई। नगर और

पहाड़ के बीच की जगह में फलों के बाग थे। हरियाली थी।

यह नगर किसका है? इसका नाम क्या है? अभी चन्द्रवर्मा आश्चर्य से सोच ही रहा था कि एक राजकर्मचारी उसके पास आकर, नगर को देखकर खुशी से हक्का-बक्का होकर चिल्लाया-" शिवपुर, शिवपुर....."

"वह शिवपुर है, यह तुम कैसे जानते हो? कभी इस नगर में तुम पहले गये थे?" चन्द्रवर्मा ने उससे पूछा।

"जी, इस शिवपुर में कुछ समय पहले मैं एक महीना रहा था। यह रुद्रपुर राज्य के पश्चिमी सीमा का नगर है। इसके बाद रेगिस्तान है। शिवपुर के राजप्रतिनिधि, वीरमल्ल को भी मैं जानता हूँ।" राजकर्मचारी ने कहा।

"तो तुम रुद्रपुर से शिवपुर का रास्ता अच्छी तरह जानते हो? पर तुमने यह हमसे कभी कहा नहीं।" चन्द्रवर्मा ने सन्देह करते हुए पूछा।

यह प्रश्न सुनकर राजकर्मचारी कुछ घबराया। "हुजूर, जिस रास्ते मैं पहले यहाँ आया था, वह यह न था।



राजधानी रुद्रपुर से शिवपुर तक और एक रास्ता भी है। पर उसे मैं अच्छी तरह नहीं जानता।

चन्द्रवर्मा और राजकर्मचारी अभी बातें कर रहे थे कि पहाड़ के नीचे उन्हें बिगुल की ध्वनि सुनाई पड़ी। तुरन्त उसके उत्तर में नगर की चार दिवारी के बुर्ज से, नगाड़ों का भयङ्कर निनाद हुआ। उसी समय धनुष, बाण, भाले लिये कुछ सैनिक बुर्ज पर आये।

चन्द्रवर्मा जान गया कि उनको शत्रु समझकर वे इन सङ्केतों के द्वारा उनके आगमन की घोषणा कर रहे थे। इससे

पहले कि बुर्जवाले उन पर बाण छोड़ते चन्द्रवर्मा ने यह आवश्यक समझा कि उनको यह सूचित किया जाय कि वे मित्र हैं। नहीं तो आपत्ति सम्भव थी। तुरन्त अपनी तलवार की नोक पर एक सफेद कपड़ा लगाकर चन्द्रवर्मा ने फहराया।

बुर्ज पर आये हुए सैनिक एक क्षण पहाड़ की चोटी पर देखते खड़े रहे। इतने में एक हट्टाकट्टा, कद्दावर व्यक्ति और सैनिकों को धकेलता सामने आया। धनुष पर बाण चढ़ाकर उसने चन्द्रवर्मा की ओर छोड़ा। तेजी से बाण आया और चन्द्रवर्मा से गज भर की दूरी पर जा गिरा। उस बाण में एक कागज पिरोया हुआ था। सबको आश्चर्य हुआ।

चन्द्रवर्मा ने बाण निकाला और उसमें बँधे कागज को खोलकर पढ़ा। शिवपुर का किलेदार, आपका नाम, नगर, और इस ओर किसलिये आये हैं, यह जानना चाहता है। यदि तुरन्त उत्तर न दिया गया, तो शत्रु समझ कर सर्वनाश कर दिया जायेगा। सावधान।

चन्द्रवर्मा ने रुद्रपुर के राजा के दिये हुये आज्ञापत्र को बाण से बाँधकर उसे



किले के बुर्ज पर छोड़ा। थोड़ी देर में बुर्ज पर कोलाहल शुरु हो गया। चन्द्रवर्मा और उसके आदमियों के स्वागत में सैनिक जयजयकार करने लगे।

पहाड़ से नगर की ओर सीढ़ियाँ बनी हुई थीं। उनपर से चन्द्रवर्मा और उसके साथी चलकर थोड़ी देर में किले की खाई के पास पहुँचे। तब तक कुछ सैनिक वहाँ आकर जमा हो गये थे। उनको देखते ही चन्द्रवर्मा के आश्चर्य और आनन्द की सीमा न रही। इसका कारण यह था कि सैनिकों के आगे उनके सरदार की बरदी में उसका पुराना मित्र सुबाहु उसको दिखाई दिया।

सुबाहु भी अपने युवराज चन्द्रवर्मा को तुरत पहचान गया। तुरन्त उसने अपना हाथ हिलाया। इसका मतलब यह था कि वे किसी को न जानने दें कि उन दोनों ने एक दूसरे को पहचान लिया था। चन्द्रवर्मा यह जान गया, जल्दी जल्दी चलकर, सुबाहु के समीप पहुँचकर उसने आदरपूर्वक उसको नमस्कार किया।

"क्या आप शिवपुर के सेनापति हैं? मुझे राजप्रतिनिधि वीरमल्ल से मिलना है।





उनसे कुछ मुख्य विषयों पर बातचीत करनी है।"

"अच्छा। पहले आपके और आपके आदमियों के रहने, खाने-पीने की व्यवस्था करनी होगी। कुछ आराम करने के बाद आप राजप्रतिनिधि को देख सकते हैं।" कहते हुए सुबाहु ने अपने सैनिकों को चन्द्रवर्मा के आदमी सौंप दिये।

सैनिकों और चन्द्रवर्मा के आदमियों के किले में चले जाने के बाद सुबाहु ने भक्तिपूर्वक चन्द्रवर्मा को नमस्कार किया-"महाराज! मैं बहुत भाग्यशाली हूँ। मैंने न सोचा था कि इस जन्म में मैं फिर आपको देख सकूँगा। आज सुदिन है। आइये, घर आकर सब बातें की जायें।" कहकर सुबाहु ने किले का मार्ग दिखाया।

सुबाहु के घर में पहुँचने के थोड़ी देर बाद चन्द्रवर्मा ने उसके बारे में सब कुछ जान लिया। उस दिन शत्रुओं से पीछा छुड़ाने के लिए वह चन्द्रवर्मा के साथ नदी में कूदा था। वह बहता बहता एक घाटी में जा लगा। कुछ दिनों बाद धीरमल्ल भी उसको उन पहाड़ों में दिखाई दिया। सर्पकेतु से वह लड़ता रहा।

आखिरी युद्ध में पूरी तरह वह हरा दिया गया। बचे-खुचे सैनिकों को लेकर वह जङ्गलों में घूमता रहा। कुछ दिनों बाद सब मिलकर रुद्रपुर के राजा, शिवसिंह के यहाँ नौकरी करने आये। उन्होंने ही उन्हें शिवपुर भेजा। शिवसिंह के यहाँ जब नौकरी के लिए आये, तभी धीरमल्ल ने अपना नाम वीरमल्ल बताया था। उसका ख्याल था कि ऐसा करने से सर्वकेतु को उसके पते- ठिकाने के बारे में न मालूम हो सकेगा।

सुबाहु के साथ नदी में कूदने के बाद क्या क्या बीती थी, चन्द्रवर्मा ने वह सब

विस्तारपूर्वक बताया। सब बताने के बाद, चन्द्रवर्मा ने यह भी बताया कि वह किस काम पर फिलहाल आया हुआ था। "काँसे का किला" नाम सुनते ही सुबाहु चकरा गया।

"महाराज, अब हमारे बुरे दिन लद गये हैं। अच्छे दिन आ रहे हैं। सच बात तो यह है कि इस समय शहर में धीरमल्ल नहीं है। हमने इस रहस्य को किसी की नहीं बताया है। हमें पता लगा है कि सर्पकेतु कुछ सेना के साथ काँसे के किले की ओर जा रहा है। उसके पास कितनी सेना है, उसकी क्या शक्ति हैं, यह जानकर, अगर सम्भव हुआ तो उसको रास्ते में ही मारने के लिए धीरमल्ल कुछ सेना को साथ लेकर, दो रोज पहले ही बिना किसी को बताये नगर से गये हैं।" सुबाहु ने कहा।

सर्पकेतु का नाम सुनते ही चन्द्रवर्मा खौल उठा। यह देख सुबाहु ने कहा-"महाराज, आज सर्पकेतु केवल वीरपुर का ही राजा नहीं है, परन्तु सारे महिष्मती राज्य का राजा है। राजा यशोवर्धन मर चुके हैं। उनका बड़ा लड़का तपोवर्धन



बैरागी बनकर जङ्गलों में घूम रहे हैं। उसने गुणवर्धन को विश्वास दिलाया कि वह उसकी सहायता करेगा, पर जब उनसे उसका काम पूरा हो गया तो सर्पकेतु ने उन्हें चुपचाप मरवा दिया और खुद गद्दी पर जा बैठा।"

"इतना सब कुछ है, बड़ा राज्य है. फिर भी धन का लालच न गया। काँसे के किले की सम्पत्ति लेने निकला है।" चन्द्रवर्मा ने कहा।

"सर्पकेतु के इस अभियान में सिर्फ धन लोभ ही नहीं, राज्य लोभ भी दिखाई

देता है। कुछ भी हो, उसका शिवपुर पर यकायक आक्रमण न करना ही अच्छी किस्मत समझना चाहिए। गुप्तचरों द्वारा हमें पहले ही मालूम हो गया है कि वह किस रास्ते काँसे के किले की ओर जा रहा है।" सुबाहु ने कहा।

सुबाहु यह कह ही रहा था कि एक दूत ने आकर उसके हाथ में एक पत्र दिया। सुबाहु उसको देखते ही चकित हो उठा। पूरी तरह पढ़ने के बाद उसने वह पत्र चन्द्रवर्मा को दिया।

चन्द्रवर्मा ने वह पत्र पढ़ा। वह पत्र धीरमल्ल ने सुबाहु को लिखा था। उसमें यह था-"धीरमल्ल अपनी कुछ सेना के साथ, सर्पकेतु की महान सेना से शिवपुर के उत्तर में रेगिस्तान में मिला। यह जानकर कि उतनी बड़ी सेना से आमने सामने खड़े होकर युद्ध करना मूर्खता थी, वह पीछे मुड़ा। पर यह बात सर्पकेतु को मालूम हो गई। उसने कुछ सेना लेकर धीरमल्ल का पीछा किया। धीरमल्ल अपनी टुकड़ी लेकर शिवपुर की ओर भागा आ रहा था। इसलिए उसने सुबाहु को लिखा था कि थोड़ी सेना नगर के संरक्षणार्थ छोड़कर बाकी सेना लेकर वह उसकी मदद के लिए आये।"

"यह एक अचिन्तित दुर्घटना है, महाराज! सेनापति धीरमल्ल के इस नगर के पहुँचने से पहले यदि सर्पकेतु से भिड़न्त हो गई तो उसकी पराजय तो होगी और इस नगर का भी नाश होगा। इसलिए बची सेना के साथ उनकी मदद के लिए जाना ही उचित है।" सुबाहु ने कहा।

(अभी है)





सिम्बलेन नाम का राजा ब्रिटेन पर राज्य किया करता था। उसके दो लड़के थे। इमोजेन नाम की लड़की के जन्म के बाद, उसकी पत्नी मर गई थी। सिम्बलेन के दोनों लड़के जब छोटे ही थे कि उन्हे कोई उठा ले गया। फिर उनका कहीं पता न लगा।

पहली पत्नी के गुजर जाने के बाद सिम्बलेन ने फिर विवाह किया। उसकी दूसरी पत्नी के लिए भी यह दूसरी शादी थी। पहले पति से उसके एक लड़का था। उसको अपनी सौतेली लड़की, इमोजेन परद्वेष था, पर इस दृष्टि से कि यदि वह राजा की मृत्यु के बाद गद्दी पर बैठी तो उसका लड़का राजा हो सकेगा, वह उन दोनों का विवाह करना चाहती थी।

परन्तु इमोजेन ने उसकी आशाओं पर पानी फेर दिया। न उसने पिता से कहा, न सौतेली माँ से ही, और पेस्थ्यूमस नाम के युवक से विवाह कर लिया। इस युवक का पिता एक योद्धा था। वह सिम्बलेन की तरफ लड़ता लड़ता, युद्ध में मारा गया था। तब उसकी पत्नी गर्भवती थी, वह भी एक लड़के को जन्म देकर मर गई। सिम्बलेन ने उस अनाथ बच्चे पर दया दिखाई। उसको अपने महल में रख कर पाला पोसा। उसीने ही उसको पोस्थ्यूमस नाम दिया था। (पोस्थ्यूमस का अर्थ, पिता के मरने के बाद पैदा होनेवाला है।)

इमोजेन और पोस्थ्यूमस बचपन से एक दूसरे को चाहते थे। दोनों ने एक ही गुरु के पास पढ़ा लिखा था। समय के



साथ उनका परिचय प्रेम में परिवर्तित हो गया। उन दोनों ने बिना किसी को बताये विवाह भी कर लिया। यह रहस्य पहले रानी को पता लगा। उसने राजा को यह बता भी दिया। सिम्बलेन को गुस्सा आया। पोस्थ्यूमस को उसने देश से निकलवा दिया। पोस्थ्यूमस ने ब्रिटेन छोड़कर रोम जाने का निश्चय किया।

पति-पत्नी ने एक दूसरे से विदा ली। उस समय इमोजेन ने अपनी अंगुली की अंगूठी निकालकर अपने पति को देते हुए कहा-"इसे हमारे प्रेम चिन्ह के रूप में हमेशा पहनना।" इसी तरह पोस्थ्यूमस ने भी उसके हाथ में एक कङ्गन पहनाया।

पति के चले जाने के बाद, इमोजेन को जीवन नीरस लगने लगा। रोम पहुँचने के बाद पोस्थ्यूमस ने नये नये मित्र बना लिये। एक दिन उनमें वाद-विवाद चल पड़ा कि किस देश की स्त्रियाँ अधिक पतिव्रता होती हैं। हर किसी ने अपने देश की स्त्री की प्रशंसा की। सब सुनने के बाद पोस्थ्यूमस ने कहा-"चाहे तुम कुछ भी कहो मेरी पत्नी इमोजेन से बढ़कर इस संसार में कोई पतिव्रता नहीं है।"

इमाकियो नाम के रोमन युवक को यह बात बिल्कुल पसन्द न आई। उसका विश्वास था कि रोमन स्त्रियों से अधिक पतिव्रता स्त्रियाँ कहीं न थीं। उसने पोस्थ्यूमस से आखिर पूछा-"अगर यह सिद्ध कर दिया कि तुम्हारी पत्नी पतिव्रता नहीं है तो क्या शर्त रही?"

"मेरे प्रेम के चिह्न के रूप में मेरी पत्नी के पास मेरा कङ्गन है। अगर तू उसके पास से वह ला सका, तो मैं उसकी अंगूठी दे दूँगा।" पोस्थ्यूमस ने कहा। अगर वह यह साबित न कर पाया

कि इमोजेन पतिव्रता न थी, तो इमाकियो ने बहुत सा धन देना स्वीकृत किया।

इमाकियों रोम से निकला, ब्रिटेन पहुँचा। उसने इमोजेन के दर्शन करके कहा-"मैं तेरे पति का मित्र हूँ।" इमोजेन ने उसका बहुत आदर-सत्कार किया। इमाकियो जान गया कि वह वस्तुतः पतिव्रता थी और किसी भी हालत में पर पुरुष से प्रेम न करेगी। अगर उसे शर्त जीतनी थी, तो सिवाय धोखे के और कोई रास्ता न था। उसने इमोजेन की दासियों को बहुत-सी घूस दी। उनकी मदद से वह उसके शयन कक्ष में घुस गया। और एक बड़े सन्दूक में छुपकर बैठा गया।

रात में, इमोजेन के सोने के बाद वह बाहर आया। कमरे को ध्यान से देखा। वहाँ रखे आभूषणों के बारे में एक कागज पर लिख लिया। फिर इमोजेन के पास जाकर उसने उसके गले पर तिल का चिन्ह देखा। धीमे से उसके हाथ से कङ्गन ले लिया। फिर वह सन्दूक में जा बैठा। अगले दिन रोम के लिए वापस निकल पड़ा।



उसने पोस्थ्यूमस से मिलकर कहा-"तेरी पत्नी, जितना तू समझ रहा है, उतनी पतिव्रता नहीं है। मैंने एक पूरी रात उसके शयन कक्ष में काटी। उसने मुझे यह कङ्गन दिया है। उसके गले पर एक तिल है।"

जो इमोजेन पर तब तक प्रेम था, वह सहसा क्रोध में परिवर्तित हो गया। पोस्थ्यूमस ने अपनी अंगुली की अंगूठी निकालकर इमाकियो को दे दी। फिर उसने पिसानियो नाम के व्यक्ति को पत्र लिखा-"मेरी पत्नी इमोजेन ने धोखा दिया है, उसे तुरन्त मार दो। उसे भी एक पत्र लिख रहा हूँ।"

यह पिसानियो नाम का व्यक्ति इमोजेन के नौकर चाकरों में था, बहुत समझदार था। उसे पोस्थ्यूमस पर भी बड़ी भक्ति थी। उसको इस तरह की चिट्ठी लिखकर पोस्थ्यूमस ने पत्नी को एक और प्रकार की चिट्ठी लिखी-"यदि तुम पिसानियो को लेकर वेल्स देश के फलाने बन्दरगाह में आ सकी तो में तुम्हें वहाँ मिलूँगा।"

पति को फिर से देखने का अवकाश मिल रहा है, यह सोच इमोजेन बहुत खुश हुई। वह बिना किसी को बताये पिसानियो को साथ लेकर वेल्स के बन्दरगाह के लिए निकल पड़ी। रास्ते में पिसानियो ने उससे असली बात कह दी। परन्तु पोस्थ्यूमस की आज्ञा पर वह इमोजेन की हत्या न करना चाहता था। "किसी दुष्ट ने आपके बारे में आपके पति से चुगली की है। जब तक उस चुगली का असर नहीं चला जाता, हम कुछ नहीं कर सकते।" उसने उससे कहा।

इमोजेन ने अपने पिता के पास बापस जाना न चाहा। अगर मौका मिला तो पति से मिलने वह रोम जाना चाहती थी।



अगर जाना ही हो, तो पिसानियो ने सलाह दी कि मर्द का वेष बदलकर जाना उचित था। उसने उसको एक औषधी देते हुए कहा-"अगर स्वास्थ्य ठीक न रहे तो यह दवाई ले लेना, रानी ने मुझे यह दवा दी है।"

पिसानियो, इमोजेन का विश्वास पात्र था, उसकी हर तरह से मदद कर रहा था। इसलिए रानी ने उसको मारने के लिए वैद्य से विष माँगा। वह वैध जानता था कि वह दुष्ट थी। इसलिए उसने उसको बेहोशी की दवा दी, और कहा कि वह भयङ्कर जहर था। वह बेहोशी की दवा ही अब इमोजेन के पास पहुँच गई थी।

इमोजेन पुरुष वेष धारण करके बन्दरगाह की ओर चली। वह जङ्गल के रास्ते से जाती जाती एक गुफा के पास पहुँची। उसे भूख सता रही थी। गुफा में झाँककर देखा, उसमें मनुष्य न थे। पर यह मालूम पड़ता था कि उसमें खाद्य सामग्री रखी हुई थी। यह सोचकर कि जब उसमें रहनेवाला आयेगा तो उसे पैसे दिये जा सकते हैं, उसने तुरन्त वह सामग्री खाकर अपनी भूख मिटा ली।





उस गुफा में रहनेवाले और कोई न.... थे,.... थे उसके भाई और बेलारियल, जो उनको बचपन में ही उठा ले गया था। यह बेलारियस, कभी सिम्बलेन के पास नौकरी किया करता था। पर सिम्बलेन ने उस पर निष्कारण राजद्रोह का अपराध आरोपित किया, और उसको देश निकाला दे दिया। सिम्बलेन से बदला लेने की ठानी। वह दोनों राजकुमारों को चुराकर

ले आया, और इस गुफा में रहने लगा। होते होते वेलारियस को उन से प्रेम होने लगा। इसलिए वह उनकी अपने पुत्रों की तरह देख भाल करता। वे जङ्गलों में शिकार करके जीवन निर्वाह कर रहे थे।

शिकार से आते ही उन्होंने पुरुष वेष में इमोजेन को देखा। इमोजेन ने यह कहकर कि उसने उनका भोजन खा लिया था, पैसे देने चाहे। परन्तु उन्होंने पैसे न लिये। उसके बारे में पूछताछ करने लगे। उसने कहा कि वह रोम जाना चाहती थी। उन्होंने उससे कहा-"थकान हटा लो, फिर चले जाना, तब तक तुम हमारे अतिथि बनकर रहो।"

उसे यह तो न मालूम था कि वे युवक उसके भाई थे फिर भी वे उसे पसन्द आये। उन्होंने भी उसके प्रति बहुत स्नेह और आत्मीयता दिखाई। अगले दिन जब वे शिकार खेलने चले गये तो इमोजेन को लगा कि उसकी तबीयत ठीक न थी। उसने पिसानियो की दी हुई दवाई पी ली। उसके स्वास्थ्य के ठीक न होने के कारण ये थे, पति के मन का यकायक बदल जाना, दूसरा कारण भोजन था। तीसरा, बिना नींद के दो दिन सफर करना।

इमोजेन ने बेहोशी की दवा पी ली थी। उसके असर से उसे ऐसा लगा जैसे प्राण

ही चले गये हो। शिकार से लौटने के बाद तीनों ने सोचा कि उनका अतिथि मर गया था। वे काफी देर तक दुखित रहे। आखिर वे उसे जङ्गल में ले गये। एक गढ़े में रखकर उस पर सूखे पत्ते डाल दिये।

जब दवा का असर जाता रहा तो सूखे पत्ते हटाकर इमोजेन उठी। उसका गुफा में जाना, वहाँ तीन आदमियों का आतिथ्य मिलना, आदि, उसको ऐसा लगा जैसे कोई स्वप्न हो। वह बन्दरगाह पहुँचने के लिए फिर चल पड़ी।

इस बीच, रोम और ब्रिटेन ने एक दूसरे पर युद्ध घोषित कर दिया। रोम से ब्रिटेन की तरफ सेना निकली। इस सेना में पोरथ्यूमस भी था। पिसानियो ने उसको पत्र लिख दिया था कि उसने इमोजेन को मार दिया था। तब से उसको जीवन से वैराग्य-सा हो गया था। यद्यपि उसका अब भी विश्वास था कि इमोजेन दोषी थी, तो भी यह सोच कि उसके कारण वह मर गई थी, वह दुखी था। युद्ध में वह मारा जा सकता था। यदि ब्रिटेन पहुँचेगा तो सिम्बलेन उसे फाँसी पर चढ़वा ही



देगा। इसलिए ही वह इस सेना में भरती हुआ था।

रोम की सेना, उस जङ्गल में से आ रही थी जहाँ इमोजेन थी। रास्ते में सैनिक उसे पकड़कर, सेनापति के पास ले गये। उसने अभी पुरुष बेष ही धारण कर रखा था। सेनापति ने उसे देखकर सोचा कि कोई अक्लमन्द लड़का नजर आता है। उसने उसको अपना नौकर रखा।

जल्दी ही दोनों सेनाओं में युद्ध हुआ। इस युद्ध में राजा सिम्बलेन की जान खतरे में आ पड़ी। उस समय बेलारियस भी अपने दोनों लड़कों के साथ लड़ा और उसने राजा की रक्षा की। रोम की सेना

की तरफ से आये हुए पोस्थ्यूमस ने भी सिम्बलेन की रक्षा की। इन सबके पराक्रम से होती होती पराजय, विजय में बदल गई।

रोम का सेनापति, पोस्थ्यूमस और इमोजेन को धोखा देनेवाला, इमाकियो, और कई लोग सिम्बलेन द्वारा कैदी बना लिये गये। पोस्थ्यूमस, जैसा उसने सोचा था, युद्ध में नहीं मारा गया। इसलिए ब्रिटिश सेनापति को उसने अपने को कैदी के रूप में सौंप दिया। पुरुष वेष में इमोजेन भी रोमन सेनापति के साथ कैद कर ली गई।

उसको कोई नहीं पहचान सका। उसने देखा कि बह अंगूठी, जो उसने अपने पति को दी थी, इमाकियो के पास थी। वह यह कल्पना न कर सकी कि उसके पास वह कैसे पहुँची थी। उसने अपने पिता के साथ पिसानियो को भी देखा। सिर्फ उसने ही उसे पहचाना।

बेलारियस और उसके दत्तक पुत्रों ने अपने अतिथि को पहचान तो लिया था, पर वह तो मर गया था। उन्होंने सोचा कि शायद उससे मिलता जुलता कोई होगा।



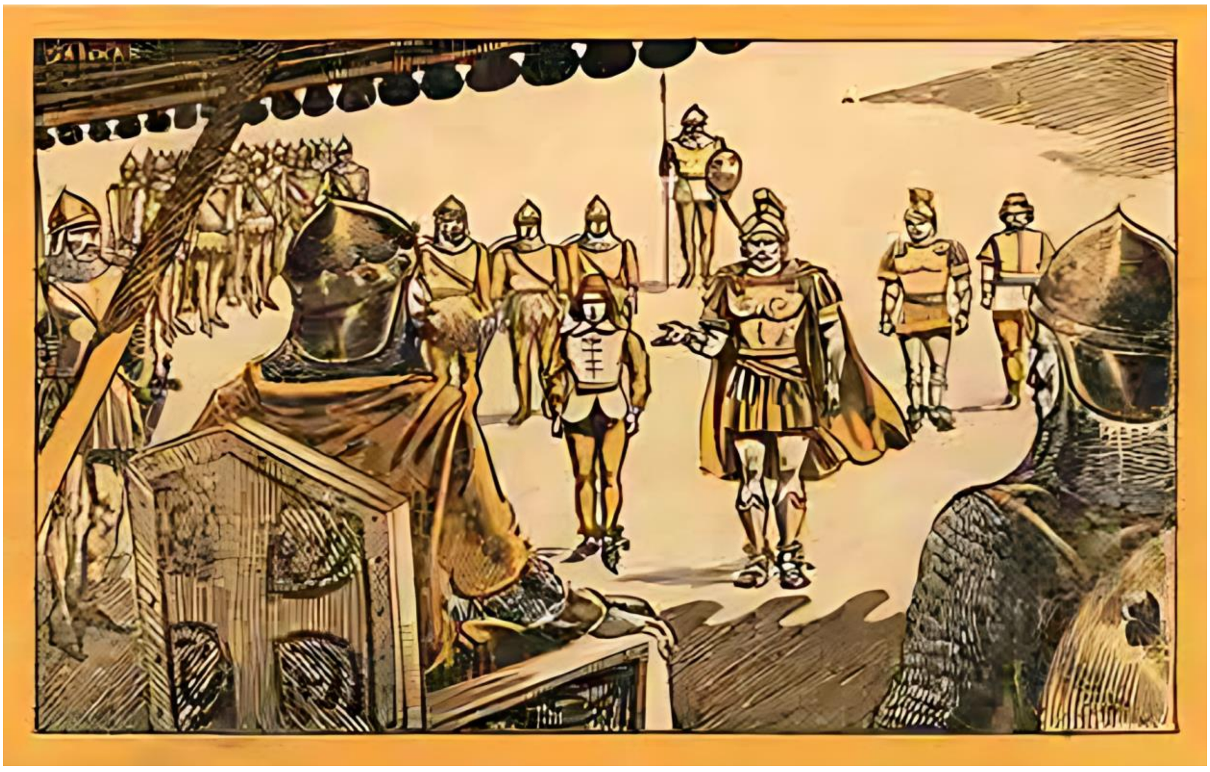
पराजित सेनापति ने सिम्बलेन से कहा-"महाराज, सुना है, आप पैसा लेकर युद्ध के कैदियों को नहीं छोड़ते हैं, उन्हें आप मरवा देते हैं। मैं खुशी से मरने के लिये तैयार हूँ। पर मेरी प्रार्थना है कि आप इस युवक को न मरवायें।" उसने इमोजेन को दिखाया।

सिम्बलेन, इमोजेन को देखकर तो पहचान न सका, पर उसमें उसके पति स्वभाविक प्रेम जाग उठा। "बेटा! मैं तुम्हारे प्राण न लूँगा। अगर तुम कुछ चाहते हो, तो माँगो।" उसने कहा।

"मेरी प्राण मिक्षा न माँगना, क्यों?" रोम के सेनापति ने कहा।

इमोजेन ने कहा-"इससे बढ़कर एक और बात है। मैं नहीं माँगी।" उसने इमाकियों के हाथ की ओर देखकर कहा-"यह मालूम कीजिये कि इस आदमी के पास यह अंगूठी कैसे आई। यही मेरी प्रार्थना है।"

"अगर तुमने यह न बताया कि तुम्हारे पास यह अंगूठी कैसे आयी, मैं तुम्हारी बोटी-बोटी कटवा दूँगा।" सिम्बलेन ने इमाकियों से कहा। इमाकियो ने बिना



कुछ छुपाये सब कुछ कह दिया। कैसे उसने और पोस्थ्यूमस ने शर्त लगाई थी, कैसे वह शयन कक्ष में घुसा था, कैसे उसने कङ्गन चुराया था। और कैसे उसकी बात पर विश्वास करके पोस्थ्यूमस ने वह अंगूठी दी थी, आदि सब उसने विस्तारपूर्वक बता दिया।

यह सुनते ही पोस्थ्यूमस के शोक की सीमा न रही। उसने अपनी पत्नी पर कितना अन्याय किया था, यह सोच वह बहुत दुःखी हुआ। इमोजेन उसका शोक न देख सकी, वह पुरुष वेष निकालकर अपने पति के पास गई।

इमोजेन को देखकर, उसके पति को जितनी खुशी हुई उतनी ही उसके पिता को भी हुई। उसने पोस्थ्यूमस को अपने दामाद के रूप में स्वीकृत किया और उसको देश निकाले की जो सजा दी थी, वह भी रद्द कर दी।

इस खुशी के मौके पर बिलारियस भी सिम्बलेन के पास, अपने दत्तक पुत्रों को लेकर गया। उसने उसको बताया कि वह कौन था। "महाराज, ये हैं आपके लड़के।" उसने उन नवयुवकों को दिखाया। सिम्बलेन की खुशी का कोई ठिकाना न था। उसने रोम के सेनापति को छोड़ दिया, और उसके साथ सन्धि कर ली। आखिर, धोखा देनेवाले इमाकियो को भी कोई सजा न दी गई। इस तरह सिम्बलेन, अपने पुत्रों और पुत्री और दामाद के साथ सुख पूर्वक रहने लगा। परन्तु उसकी दूसरी पत्नी उतना सुख न देख सकी। वह बीमार होकर मर गई।





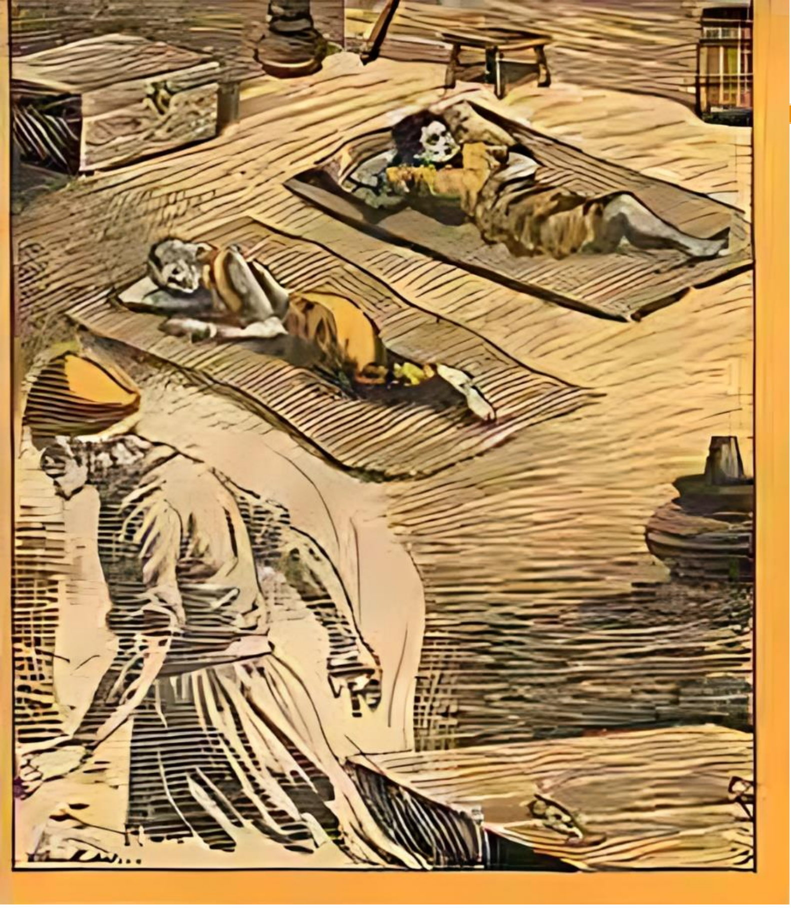
पश्चिमी तट पर पहाड़ी प्रान्त में, बदरी नाम का ग्राम है। उसमें एक मछियारा रहा करता था। वह रोज अपनी तमेड़ पर समुद्र में जाता, मछली पकड़कर जीवन निर्वाह किया करता। परन्तु कुछ दिनों के बाद उसकी तमेड़ टूट गई। एक और तमेड़ बनाने के लिए वह एक अच्छे ठूँठ को खोजता एक दिन शाम को पहाड़ पर गया। बहुत दूर गया; पर कहीं उसे तमेड़ के लायक ठूँठ न मिला। इतने में आकाश में घने बादल छा गये। अन्धेरा हो गया। क्योंकि वह उस प्रान्त से परिचित न था इसलिए वह घर की ओर चला।

परन्तु मछियारा कहीं रास्ता भटक गया होगा, क्योंकि जहाँ देखो, वहाँ पहाड़ ही पहाड़ थे। समुद्र कहीं न दिखाई दिया।

चारों तरफ घना अन्धेरा। हाथ को हाथ न दिखाई देता था। रिमझिम भी होने लगी। "बारिश में भीगते, भूख से मरते क्या सारी रात मुझे इस पहाड़ पर ही काट देनी होगी?" वह यह सोच रहा था कि उसको दूरी पर टिमटिमाती रोशनी दिखाई दी।

मछियारा की जान में जान आई। वह उस तरफ गया जिस तरफ से रोशनी आ रही थी और एक कुटिया में पहुँचा। बहुत देर किवाड़ खटखटाने के बाद एक बूढ़े ने किवाड़ खोला। "मैं रास्ता भटक गया हूँ। क्या थोड़ा खाना देकर मुझे रात को यहाँ सोने दोगे, बाबा?" मछियारे ने पूछा।

"अन्दर आओ। यहाँ से पाँच छः मील की दूरी तक कहीं कोई घर नहीं है।" बूढ़े ने कहा।



अन्दर बूढ़े की पत्नी कोई खाने की चीज़ बना रही थी। उसने मछियारे से कुछ न कहा। बूढ़े से भी उसने कुछ न कहा। खाना बनने के बाद तीनों हल्का खाकर लेट गये। मछियारे ने आँखें मूँद रखी थीं; पर उसे नींद न आ रही थी।

"ये बूढ़े इस निर्जन प्रान्त में क्यों रह रहे हैं? क्या वे आपस में एक दूसरे से बातचीत नहीं करते हैं? इनका क्या भेद है, मालूम करना होगा।" उसने सोचा।

आधी रात के समय बूढ़ा धीमे से उठा। बिल्ली की तरह चलता कोने में रखे सन्दूक के पास गया। उसने सन्दूक खोलकर उसमें से एक नीले रङ्ग की टोपी निकाली। मछियारे ने यह देखा। बूढ़े ने उस टोपी को सिर पर रखकर कहा-"काश्मीर काश्मीर" तुरन्त बूढ़ा गायब हो गया। फिर बुढ़िया उठी। सन्दूक के पास जाकर उसने एक और नीले रङ्ग की टोपी निकाली। सिर पर रखकर "काश्मीर, काश्मीर" कहा। फिर वह भी अन्तर्धान हो गई।

मछियारा यह सब देखकर कुछ देर तक अचरज करता रहा। यह पता लगा कर कि बूढ़े, बुढ़िया वहाँ न थे, वह भी उठकर सन्दूक के पास गया। उसको खोला। उसमें दो तीन और नीले रङ्ग की टोपियाँ थीं। उनमें से एक लेकर उसने सिर पर रखकर कहा-"काश्मीर काश्मीर...."

तुरन्त उसकी आँखें भारी हो मुँद गईं। उसे लगा जैसे उसके ऊपर बहुत तेजी से हवा चल रही हो। जब हवा की तेजी कम हुई और उसने आँखें खोली तो बह एक राजमहल की भोजनशाला में था। बूढ़ा और बूढ़ी, राजा के भोजन में जो कुछ बच गया था, उसे खाकर आराम से

गप्पें मार रहे थे। सोने के लोटे व थाल उनके गट्ठरों में चले जा रहे थे। मछियारे को देखते ही दोनों ने, नीले रङ्ग की टोपी सिर पर रखकर कहा-"बद्री पहाड़, बद्री पहाड़" वे अन्तर्धान हो गये।

उनके चले जाने के बाद मछियारे ने सोचा कि अब उसे रोकने-टोकने वाला कोई न था। उसने पेट भर खाया। फिर उसे राजा की अंगूरी दिखाई दी। उसे उसने खूब पिया और नशे में वह वहीं सो गया।

अगले दिन राजा के नौकर मछियारे को भोजनशाला में देखकर, उसे बाँधकर राजा के पास ले गये। "महाराज, रोज जो बिना किसी को दीखे राजमहल में चोरी करता आया है, वह यही है।"

"इतने चालाक चोर का जीवित रहना किसी के लिए श्रेयस्कर नहीं है। इसे एक स्तम्भ से बाँधकर उसके चारों ओर चिता बनाकर, इसको जीते जी जला दिया जाय।" राजा ने आज्ञा दी।

मछियारे को चौक में ले जाया गया। वहाँ एक खम्भा गाड़ा गया और उसको उससे बाँध दिया गया। फिर



उसके चारों और चिता बनाई गई। चिता को आग लगा दी गई।

इस डाकू को देखने नगर के लोग, बच्चों से लेकर बूढ़ों तक सब आये। क्योंकि राजा के महल में घुसनेवाले डाकू को पकड़ने के लिए बहुत प्रयत्न किया गया था। यद्यपि राजमहल के चारों ओर सैनिकों का कड़ा पहरा था तो भी चोर उनकी आँखों में धूल झोंक कर अन्दर चला जाता और बाहर भी चला आता। लोगों का ख्याल था कि यह चोर चोर नहीं कोई भूत था। इसलिए

उसके पकड़े जाते ही लोग उसको देखने आये ।

आग पास आ रही थी। मछियारे ने सोचा कि उसकी आयु समाप्त हो चुकी थी। इतने में उसे नीले रङ्ग की टोपी याद आई। उसने न्यायाधिकारी की ओर मुड़कर कहा-"हुजूर, मेरी एक आखिरी इच्छा है। मेरी टोपी मेरे सिर पर रख दीजिये। मुझे वह बहुत पसन्द है। मुझे उसके साथ मरने दीजिये।"

यह इच्छा न्यायाधिकारी को ठीक लगी। उसकी आज्ञा पर एक सैनिक ने टोपी ले जाकर उसके सिर पर रखी। मछियारे ने तुरन्त कहा-"बद्री पहाड़, बद्री पहाड़" वह यह कहता कहता अदृश्य हो गया। उसके साथ जिस खम्भे के साथ वह बाँधा गया था, वह भी अदृश्य हो गया। लोग जान गये कि वह चोर आदमी न था।

मछियारा बद्री पहाड़ पर पहुँचा। उसके बन्धन खोलने के लिए कोई मिलेगा कि नहीं, यह सोचते उसने सिर उठाया था कि उसको एक आदमी दिखाई दिया। "भाई, भाई, तुम्हारा भला होगा, जरा मेरे बन्धन काट दो।" उसने उस आदमी से कहा।

"तुम इस जगह, इस खम्भे के साथ कैसे बाँधे गये? यह तो कोई अच्छा देवदारु मालूम होता है।" उस आदमी ने उसके बन्धन खोलते हुए कहा।

"हाँ हाँ, मुझे तमेड़ के लिए लकड़ी चाहिये थी, मैं ले आया हूँ। काश्मीर के राजा ने स्वयं मुझे यह दी है।" कहता वह मछियारा उस खम्भे को कन्धे पर डाल घर की ओर चल पड़ा।



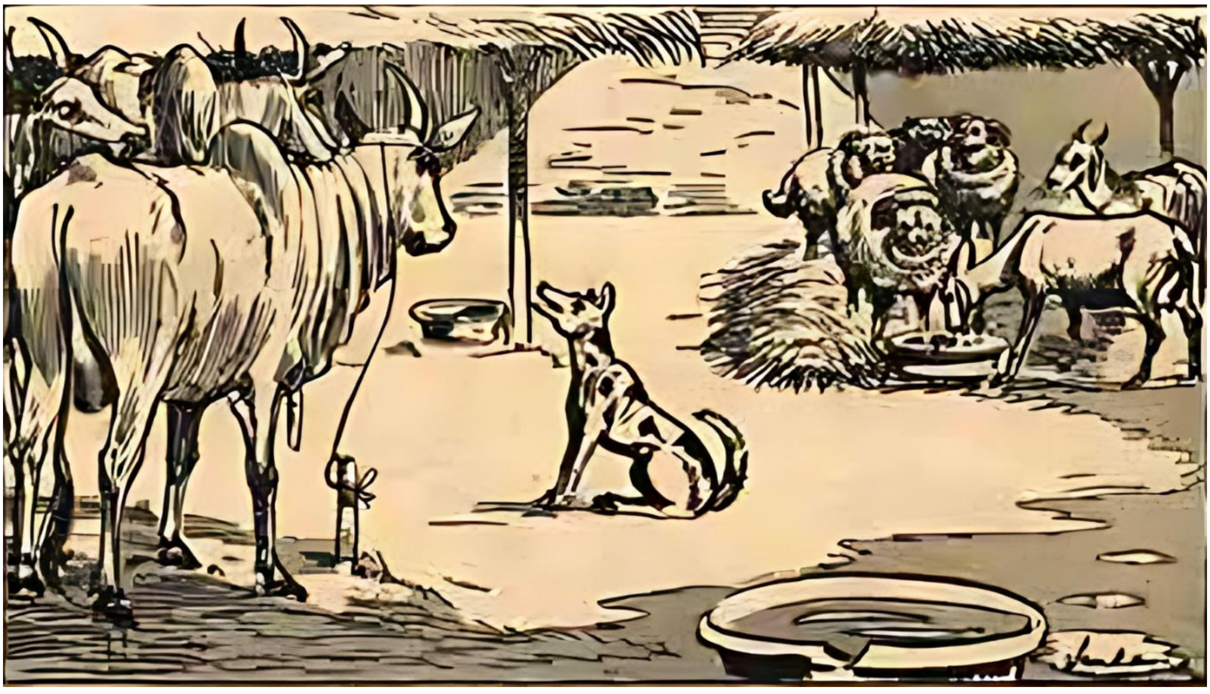
आखिर क्यों ?

एक अमीर किसान की एक लड़की थी। उसकी एक बड़े घराने में सगाई हुई। शुभ मुहूर्त निश्चय किया गया। विवाह की जोर शोर से तैयारियाँ होने लगीं।

किसान के बैलों को अधिक काम दिया जाने लगा। उन्हें न खाने की फुरसत, न आराम की फुरसत। एक दिन वे आपस में यों कहने लगे:-

"देखा! मालिक की लड़की की शादी है, इसलिए सब खुश हो रहे हैं। हम ही जो तोड़ मेहनत कर रहे हैं। हम से तो वे भेड़ बकरी ही भलीं। उनको आज कल क्या नहीं खिलाया जा रहा है। और कोई यह भी नहीं देखता कि हमने खाया है कि नहीं।

यह सुन घर के कुत्ते ने उनसे कहा-"अरे पागल! भेड़ बकरियों को शादी के दिन काटकर दावत में खा लिया जायेगा। इसलिए ही उन्हें, यों दबकर खिलाया जा रहा है, क्यों उनको देखकर तुम डाह करते हो?"





यूरोप के पर्वतों में सब से ऊँचा एल्प्स है। इन पहाड़ों में लूसर्न नाम की एक बड़ी झील है। स्विजरलैन्ड की प्रजा के स्वतन्त्रता युद्ध के लिए यह झील रङ्ग-भूमि बनी। यह युद्ध सात सौ वर्ष पहले हुआ।

लूसर्न झील के चारों ओर बड़ी-बड़ी घाटियाँ हैं। इन घाटियों में रहनेवाले बहादुर और स्वतन्त्रता प्रिय होते हैं। आस्ट्रिया देश के राजाओं ने उनको अपने आधीन किया और अपने गवर्नरों द्वारा वे उनका शासन किया करते। इनके अत्याचारपूर्ण शासन के विरुद्ध बहुत से युद्ध हुये। आखिर वहाँ के निवासियों की विजय हुई। उन्होंने एक स्वतन्त्र देश की स्थापना की। यह देश ही स्विजरलैण्ड है।

लूसर्न के चारों ओर का ईलाका जिलों में बँटा हुआ था। उनमें ऊरी भी एक था। इस जिले के एक गाँव में विलियम टेल नाम का एक शिकारी रहा करता था। वह शामाय नामक हरिणों का शिकार किया करता। इन हरिणों का चमड़ा बहुत मुलायम होता है, और बहुमूल्य भी। वह एक चट्टान से दूसरी चट्टान पर कूदकर हरिणों को भगाता और एक ही बाण में उनको गिरा देता। वह जिस घाटी में रहता था, उसमें उसकी बराबरी करनेवाला कोई और शिकारी न था। वह कभी किसी को तङ्ग न करता। सीधा-सादा आदमी था। सवेरे जाकर शामाय हरिणों का शिकार करता, लसने नगर में जाकर उनकी खालें बेचता। जो कुछ पैसा मिलता उससे अपने परिवार का पोषण

गुरुदयाल सिंह



करता। उसका जीवन कतई निराडम्बर था। उसमें कोई दिखावा न था।

सर्दियों के दिन थे। सवेरे-सवेरे विलियम टेल शिकार के लिए निकल पड़ा। शाम तक एक हरिण मारा और उसको कन्धे पर डाला। जाते-जाते रास्ते में एक जङ्गली बत्तख मारी और दोनों को बाँधकर वह घर की ओर चलते-चलते झील लूसर्न के पास पहुँचा।

उस समय तूफान आनेवाला था। बहुत तेज हवा के कारण झील में बड़ी-बड़ी लहरें उठ रही थीं। आकाश में घने बादल छा रहे थे। विलियम टेल जब झील तक पहुँचा, तो वहाँ एक और आदमी आया। वह किश्तीवाले से कह रहा था-"जो माँगो दूँगा, मुझे झील के पार ले चलो।"

"लहरों को तो देखो। तूफान आनेवाला है। किश्ती नहीं जा सकती, तूफ़ान को जरा थमने दो।" किश्तीवाला कह रहा था। गवर्नर के सैनिक मेरा पीछा कर रहे हैं। अगर मैं पकड़ा गया तो वे मुझे जिन्दा न छोड़ेंगे। मेरी रक्षा करो।" वह व्यक्ति गिड़गिड़ा रहा था।

परन्तु किश्तीवाला किसी भी हालत में उसको पार ले जाने के लिए नहीं मान रहा था। यह सब विलियम टेल देखता खड़ा था। उसने किश्ती में कूद कर कहा-"आओ, मैं तुम्हे पार लगा देता हूँ।" जब वह व्यक्ति किश्ती में चढ़ गया, तो विलियम टेल जोर से चप्पू चलाता किश्ती को भयङ्कर तरङ्गों में ले गया। किती धक्के खा रही थी। पर विलियम टेल उसको होशियारी से आगे ले जा रहा था। किश्ती कोई तीस हाथ दूर गई होगी कि गवर्नर के सैनिक किनारे पर आये। पर अब वे क्या कर सकते थे?

"वे तेरा पीछा क्यों कर रहे हैं? क्या हुआ है?" विलियम टेल ने उस व्यक्ति से पूछा।

"मैं आजाद हूँ। गवर्नर को मुझसे चिढ़ है। यही नहीं, उस दुष्ट की नजर मेरी पत्नी पर भी है। मैं जब जङ्गल में ईंधन काट रहा था, वह मेरे घर गया। मेरी पत्नी के सामने ऊँटपटाङ्ग बकवास की। नहाने के लिए पानी गरम करने को कहा। वह मुझे ढूँढ़ती आई। मुझे सारी बात बताई। मैं आपे से बाहर हो गया। उसी समय मैंने घर जाकर कुल्हाड़ी से उसके दो टुकड़े कर दिये।" उस व्यक्ति ने कहा।

विलियम टेल ने कुछ न कहा। परन्तु वह और तेजी से चप्पू चलाने लगा। उसके जिले में भी स्वतन्त्र किसान थे। उनको अपने राजा पर भी अभिमान था। परन्तु गवर्नर गेस्लर उनकी आजादी लूटने की हर तरह से कोशिश कर रहा था।

विलियम टेल, शिज़ जिला के बूनेन ग्राम में किश्ती ले गया। और उस व्यक्ति को एक स्वतन्त्र नागरिक के घर रखकर वह अपने घर की ओर चला।

गवर्नर गेस्लर को अपनी शक्ति और अधिकारों पर गर्व था। उसने



एक किला बनवाया जिसकी दीवारें तीन फीट मोटी थीं। उसने बहुत से लोगों को उसमें कैद करने के लिए बहुत से उपाय सोचे।

एक दिन गेस्लर के सैनिकों ने अल्टडार्फ नामक ग्राम के चौक में एक डण्डा गाड़ा और उसपर गवर्नर की टोपी रखी। यह टोपी पत्ते के रङ्ग की थी। इस पर एक पंख भी लगा था। फिर उन्होंने तालियाँ बजा बजाकर लोगों को जमा किया, और कहा-"स्त्रियो और पुरुषो, सब सुनो। जो कोई इस तरफ से जायेगा उसको टोपी के सामने झुककर अभिवादन करना होगा।

जो ऐसा न करेगा वह गवर्नर और राजा का अपमान कर रहा होगा। उसको के जाकर कैद में डाल दिया जायेगा। यह सबको बताया जाता है।" यह मुनादी पिटवा दी गई।

रास्ते में आने-जानेवालों से अभिवादन कराने के लिए दो सैनिक वहीं खड़े हो गये। पर बड़े लोग उस तरफ न आये। क्योंकि उन्होंने मुनादी सुन ली थी, इसलिए घूम फिर कर वे दूसरे रास्तों से जाने लगे। परन्तु कुछ बच्चे किलकारियाँ भरते, डण्डे की परिक्रमा करते और झुक-झुककर टोपी को सलाम करने लगे। यह उनके लिए एक खिलवाड़ सा था।

गेस्लर की इस घोषणा के कारण तीन जिलों के लोगों को बड़ा गुस्सा आया। एक दिन रात को झील के किनारे के एक जङ्गल में उनकी एक गुप्त सभा हुई। उस सभा में यह निश्चय किया गया कि आगामी नव वर्ष के पहले की रात को सब प्रान्तवाले अपने अपने प्रान्तों के किलों पर हमला करें। यह सिवाय उनके, जिन्होंने सभा में भाग लिया था, किसी और को न मालूम हो।



विलियम टेल इस सभा में न गया था। उसको इस विद्रोह के बारे में भी कुछ न मालूम था। एक दिन ऐसा मौका हुआ कि वह अपने लड़के को लेकर अल्टडार्फ की तरफ आया। वह जब दायें हाथ में धनुष-बाण पकड़कर और बायें से लड़के का हाथ पकड़कर गली गली में से जा रहा था, तो लोग उसको देखकर खुश हुए।

विलियम टेल अभी डण्डे के पास से कुछ कदम आगे बढ़ा था कि दो भालों से उसका रास्ता रोक दिया गया। सैनिक उसके हाथ पैर जञ्जीरों से बाँधने की कोशिश करने लगे। उन्होंने कहा-"तुमने गवर्नर की घोषणा का उल्लंघन किया है। जेल चलो।"

विलियम टेल तो बलवान था ही, उसने भालों को हटाते हुए कहा-" मैं स्वतन्त्र हूँ। मैं भगवान, राजा और उसके द्वारा नियुक्त गवर्नर को प्रणाम कर सकता हूँ। पर उनकी टोपी को नहीं।"

इसी समय, गवर्नर अपने नौकर-चाकरों के साथ उस तरफ आया। सबने इस तरह कवच आदि पहने हुए थे, जैसे वे युद्ध





भाग लिया था। वे गवर्नर की बोटी-बोटी काटने के लिए उतावले हो रहे थे। परन्तु उनमें से किसी के पास भी उस समय कोई हथियार न था।

गवर्नर ग्लेसर को भी टेल से चिढ़ थी, क्योंकि वह स्वतन्त्र था। उसने टेल से कहा-"तुमने मेरी आज्ञा का उल्लंघन किया है। मैं तुम्हें मौत की सजा दे सकता हूँ।"

"क्षमा कीजिये, आप भी कैसे चाहते हैं कि हम केवल आपकी टोपी को ही प्रणाम करें। हम स्वतन्त्र लोग हैं।" टेल ने कहा।

"तुम और तुम्हारे मित्र हथियार लेकर घूमते-फिरते हैं। मैने आज्ञा दी हुई है कि कोई भी हथियार लेकर न फिरा करे। इस आज्ञा का उल्लंघन का क्या मतलब है, मैं तुम्हें दिखाता हूँ। तुम्हारे बाण से ही तुम्हें दण्ड दूँगा। यह तुम्हारा लड़का है न?" कह कर गवर्नर ग्लेसर ने अपने सैनिकों से कहा-"इस लड़के को ले जाकर उस पेड़ के पास खड़ा करो। इस सेव को उसके सिर पर रखो।

के लिए जा रहे हो। उनको देखते ही सैनिकों का होसला बढ़ा। "हूँ, चलो जेल" वे विलियम टेल को धक्का देने लगे। परन्तु इतने में विलियम टेल को छुड़ाने के लिए ग्रामवासी क्रोध में भागे-भागे आये और चारों ओर जमा हो गये।

"मित्रो! जल्दबाजी न करो। अगर आप मुझे छुड़ाना चाहते हैं, तो मुझे किसी की मदद की जरूरत नहीं है।" टेल ने आमवासियों से कहा।

इतने में गवर्नर वहाँ आ ही पहुँचा। वहाँ जमा हुये ग्रामवासियों में कई ऐसे थे, जिन्होंने उस गुप्त सभा में

उसके पास से अस्सी अंगुल नापो। उस दूरी से विलियम टेल अपने बाण से अपने लड़के के सिर पर रखे सेव को मारेगा। अगर यह सेव का निशाना चूक गया, और इसका लड़का मर गया तो इसे भी मरवा दूँगा।"

टेल ने गवर्नर की ओर घबराते हुये देखा। उसके ऊपर भाले तने हुये थे। उसे बड़ा गुस्सा आया। उसकी मर्जी हुई कि गवर्नर को घोड़े से गिराकर खूब मारे। पर ऐसा करने से उसके लड़के पर बिपत्ति आ सकती थी। इसलिए वह लहू का घूँट पीकर रह गया। गवर्नर के सामने उसने झुककर कहा-"मुझे मालूम न था। माफ कीजिये। मैंने जान-बूझकर आपकी आज्ञा का उल्लंघन नहीं किया है। मुझे जाने दीजिये।"

गवर्नर को दया न आई। जमा हुये लोगों के मुखों पर उसे क्रोध दिखाई दिया। सब पर दबदबा जमाने के लिए उसने सोचा यह अच्छा मौका था।

गवर्नर के सैनिकों ने लड़के को पकड़कर पेड़ के पास ले जाकर



खड़ा कर दिया। जब उन्होंने उसकी आँखों पर पट्टी बाँधनी चाही, तो उसने कहा-"नहीं! मेरे पिता का बाण मेरा कुछ न बिगाड़ सकेगा। मुझे कोई डर नहीं है।"

टेल भी निश्चित स्थान पर खड़ा किया गया। उसने घुटने टेककर निशाना देखा। बाण उतारकर वह गुनगुनाया-"यह मुझसे न होगा।"

गवर्नर ने परिहास करते हुये कहा-"ओह, तुम नहीं कर सकते! तूफान में तुम हत्यारों को झील पार ले जा सकते हो! क्यों जब तुम हत्यारों की मदद कर सकते हो, तो क्या अपनी मदद नहीं कर सकते?

बाण छोड़ो, नहीं तो अपने और अपने लड़के के प्राण छोड़ो। सोच लो।" गवर्नर ने कहा।

विलियम टेल के मन में जो तूफान चल रहा था, वह यकायक थम सा गया। उसने अपने और लड़के के बीच का फासला ध्यान से नापा। फिर उसने गवर्नर और अपने बीच का फासला नापा। निश्चित स्थल पर पहुँचकर उसने दो बाण निकाले। एक उसने कमरबन्द में रखा और दूसरा धनुष पर। इतने लोग थे; पर सब के सब बिल्कुल चुप थे।

विलियम टेल ने बाण छोड़ा। उसके लड़के के सिर पर जो सेव था, वह दो टुकड़ों में कट गया। लोगों ने हर्ष ध्वनि की। वे भाला लिये उन सैनिकों को धकेलते आगे बढ़े, जिन्होंने विलियम टेल को घेर रखा था।

उनको दूर हटाने के लिए गवर्नर गेस्टर ने अपने सिपाहियों को झिड़का। उसने टेल से पूछा- "तुम्हारा निशाना सचमुच आश्चर्यजनक है। पर तुमने दो बाण क्यों निकाले?"

"यह तीरन्दाजों का रिवाज़ है।" टेल ने कहा।



"सच बताओ। मैं तुम्हारा कुछ न बिगाड़ूँगा।" गेस्लर ने कहा।

विलियम टेल जोर से चिल्लाया- "तुम सच चाहते हो, तो सुनो। वह बाण तुम्हारे लिये निकाला था। अगर पहला बाण सेव को न लगकर मेरे लड़के को लगता, तो दूसरा बाण तुम्हारी छाती के पार चला जाता। कम से कम दुसरा बाण निशाने पर लगता ही।" उसकी आवाज इतनी ऊँची थी कि दिशायें प्रतिध्वनित होती सी लगती थीं। यह सुन गेस्लर गरमा गया। उसने अपने सैनिकों से कहा- इस दुष्ट को गिराकर जञ्जीरों से बाँध दो। इसको ले जाकर अपने किले की काली कोठरी में रखकर उसको खूब तङ्ग करो, मारो, काटो, नोचो...." उसने आज्ञा दी।

गवर्नर की किश्ती घाट पर तैयार थी। उस किश्ती पर सरकारी चिन्ह थे। उसमें किश्ती चलानेवाले सोलह अदमी थे। टेल को जञ्जीरों से बाँधकर उस किश्ती में डाल दिया गया। गेस्लर की खुशी की हद न थी। एक ऐसा आदमी पकड़ा गया था, जो उसकी बगल में कटार की तरह था।





गवर्नर गेस्लर को अपने प्राणों पर आशा न रही। तूफान के कारण किश्ती किसी पहाड़ से टकरा सकती थी। पतवार सम्भालनेवाले ने गवर्नर के पास जाकर कहा-"अगर हम जीते जी रहना चाहते हैं तो विलियम टेल की जञ्जीरें खुलवा दीजिये और उसे पतवार सम्भालने के लिए कहिये। यह काम वह ही कर सकता है। और कोई नहीं कर सकता।"

गवर्नर गेस्लर के चढ़ने के बाद किश्ती चली। झील के चारों ओर के पहाड़ शान्त थे। भीनी-भीनी हवा के कारण छोटी-छोटी लहरें उठ रही थीं। दक्षिण में बादल दिखाई दिये। उस हवा के साथ बारिश भी आ सकती थी। यह चप्पू चलानेवाले आस्ट्रियन न जानते थे।

तूफान आ ही गया। उसकी तेज़ी के कारण चप्पू चलानेवाले डर गये, देखते देखते तूफ़ान और भी बढ़ गया। दो चप्पू लहरों की चोट से टुकड़े-टुकड़े हो गये । पतवारवाला, पतवार न सम्भाल सका। उसने उसे छोड़ दिया। गवर्नर की किश्ती तूफान के लिए कठपुतली- सी हो गई।

गवर्नर भी क्या करता? उसने सिर हिलाकर स्वीकृति दे दी।

टेल को छोड़ दिया गया। उसे पतवार के पास बैठा दिया। "तुम जोर से चप्पू चलाओ। बाकी में देख लूँगा।" विलियम टेल ने कहा।

चप्पू चलानेवालों का ढाढ़स बढ़ा। टेल के हाथ में पतवार आते ही किश्ती रास्ते पर आई। वह हज़ार आँखों से चारों ओर देख रहा था। इस झील के किनारे एक जगह दस फीट चट्टान की परत पानी में आई हुई थी।

क्योंकि वह पानी के अन्दर थी इसलिए नये लोगों को उसका पता न लगता था। टेल गवर्नर की किश्ती को उस तरफ ले गया। टेल ने देखा कि उसके धनुष को पकड़ा सिपाही उसके पास ही था।

गवर्नर की कश्ती का सामने का भाग पत्थर से जा टकराया। तुरन्त किश्ती घूमी। पतवारवाला हिस्सा किनारे की तरफ आया। उसी समय टेल उस सैनिक पर कूदा। अपने धनुष-बाण लेकर वह पत्थर पर जा कूदा।

गेस्लर ने खड़ा होना चाहा। लहरो ने किश्ती को झकझोरा, वह किश्ती में गिर गया। उसके अङ्गरक्षकों के भाले फेंकने से पहले विलियम टेल किनारे की झाड़ियों में गायब हो गया। क्योंकि पतवार पकड़नेवाला कोई न था इसलिए किश्ती लहरों के साथ धक्के खाने लगी।

इस तरह भागकर विलियम टेल घर न गया। वह पहाड़ी पगडण्डियों से बूनन पहुँचा। यहाँ भोजन किया। वहीं उसे गवर्नर के बारे में मालूम हुआ। गवर्नर की किश्ती झील में डूबी न थी। गवर्नर सकुशल वूनन पहुँच गया था। वह वहाँ से अपने किले की ओर जानेवाला था।



विलियम टेल रात भर पहाड़ों में, जङ्गलों में चलता रहा, सवेरे वह गवर्नर के किले के रास्ते पर पहुँचा। उस किले तक जाने के लिए सिवाय उसके और कोई रास्ता न था। वह रास्ता एक सङ्करी गहरी घाटी में से जाता था। रास्ते के दोनों तरफ बड़े-बड़े पेड़ थे। उन पेड़ों में छुपकर वह गवर्नर के आने की प्रतीक्षा करने लगा।

काफी देर बाद गवर्नर के लोग उस तरफ़ आये। टेल ने अपने पास बचे बाणों में से एक को लेकर उस पर छोड़ा। वह बाण सीधे जाकर गेस्लर की छाती पर

लगा। गवर्नर अपने घोड़े से गिरकर मर गया। परन्तु मरने से पहले मारनेवाले को अपनी आँखों देखकर मरा।

गवर्नर के सैनिकों ने विलियम टेल का पीछा किया। एक चट्टान के पीछे छुपकर उसने अपनी जान बचाई। फिर वह अपने घर पहुँचा।

गवर्नर की मृत्यु का समाचार तब तक ऊरी जिला में पहुँच गया था। लोग जत्थे बना-बनाकर गलियों में घूम-फिर रहे थे और अत्याचारी गवर्नर की मृत्यु के बारे में जोर जोर से बातें कर रहे थे।

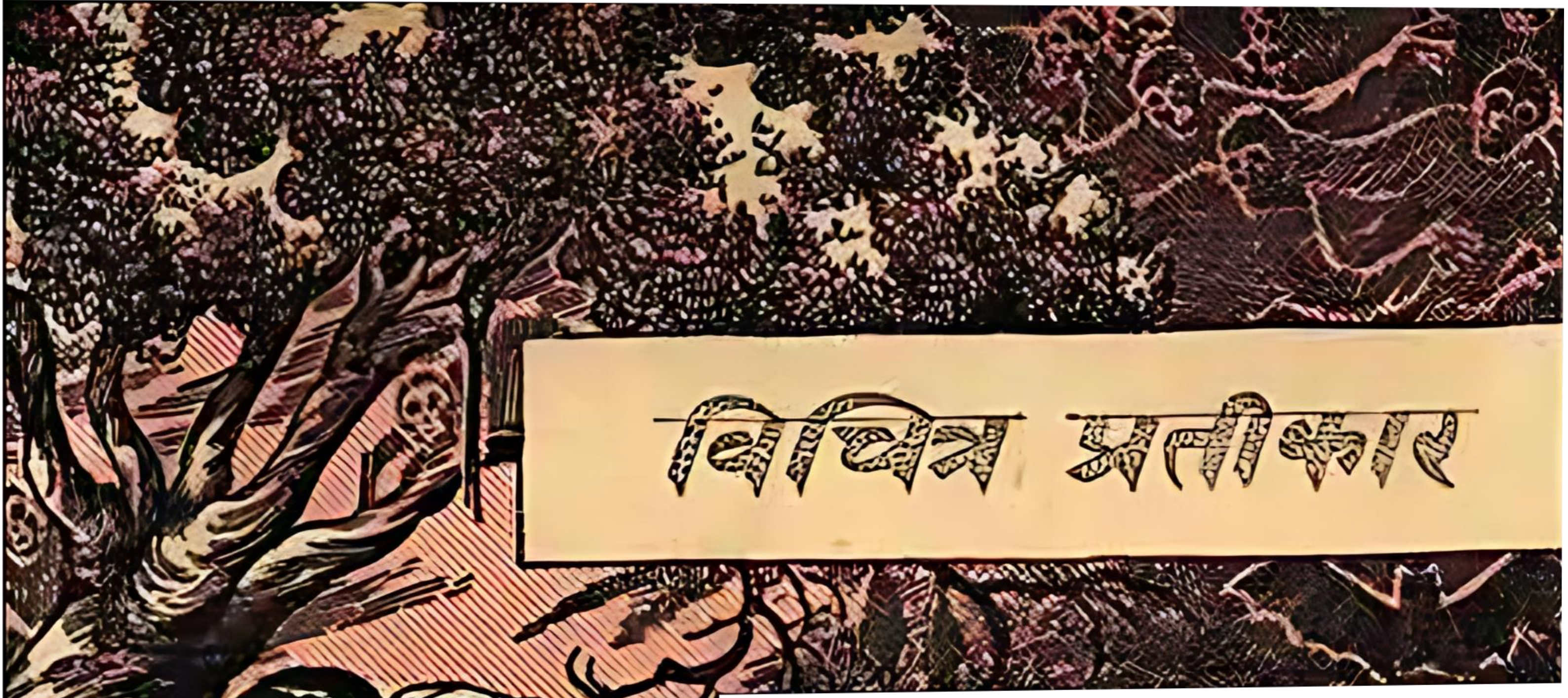
विलियम टेल को देखते ही लोगों ने उत्साह में अपने स्वतन्त्रतादाता का जलूस निकालना चाहा, पर उसने उन उत्सवों में हिस्सा न लिया। वह अपनी पत्नी के साथ घर चला गया।

अगले दिन वह सवेरे शामाय हरिणों को शिकार करने निकल गया, जैसे कुछ हुआ ही न हो। जब उसने पहाड़ से देखा, तो उस जगह जहाँ गवर्नर का किला होना चाहिये था, उसे सिर्फ रोड़े-पत्थर ही दिखाई दिये।

विलियम टेल के साहसिक कार्य के बारे में जानते ही लोगों ने जहाँ-जहाँ गवर्नरों के किले थे, वहाँ वहाँ उन्हें मिट्टी में मिला दिये।

फिर तीन जिलों के लोगों ने मिलकर अपना सम्बिधान तैयार किया। आज भी उस सम्बिधान के अनुसार स्विजरलैण्ड में प्रजातन्त्र चल रहा है। उसके अंकुरित होने का कारण विलियम टेल का बाण था, अब भी वहाँ के लोग यह बताते हैं।





विचित्र प्रतीकार



विकमार्क ने अपना हठ न छोड़ा। वह फिर पेड़ के पास गया। शव को उतारकर कन्धे पर डाल पहले की तरह चुपचाप श्मशान की ओर चल पड़ा। तब शव में स्थित बेताल ने कहा-"राजा, कई में हम जानते हैं, अपार राजभक्ति होती है। ऐसे लोग अपने राजा के लिए प्राण भी न्योछावर का देते हैं। परन्तु तुम्हारी तरह किसी आदमी के लिए इतनी मेहनत करना मैंने कहीं नहीं देखा। ताकि तुम्हे थकान न हो इसलिए मैं तुम्हे मन्दहास नाम के राजभक्त की कहानी सुनाता हूँ।" उसने यों कहानी सुनानी शुरू की।

किसी जमाने में कैलासवती नगर में मन्दहास नाम का एक उत्तम क्षत्रिय रहा

करता था। वह सम्पन्न था और उसका स्वभाब गम्भीर था। उसने अपनी बिरादरी की क्षत्रिय कन्या, नीलालक से प्रेम करके विवाह करना चाहा। उसने तरह-तरह से अपना प्रेम प्रदर्शित किया। और यह भी साफ साफ सूचित कर दिया कि वह उसके लिए प्राण तक देने के लिए तैयार था।

परन्तु नीलालक को मन्दहास पर प्रेम न था। वह धृतवर्मा नामक एक सामन्त से प्रेम करती थी। आखिर उसने उससे ही शादी की। कुछ समय बाद उनका एक लड़का भी पैदा हुआ।

नीलालक से उसका बिबाह न होना और धृतवर्मा का हो जाना, यह बात मन्दहास के मन में भाले की तरह चुभ रही थी। "जिस दिन मौका मिलेगा, मैं उस दिन इस धृतवर्मा को अपनी तलवार के घाट उतार दूँगा।" मन्दहास ने प्रतिज्ञा की। धृतवर्मा की हत्या ही मानों उसके जीवन का ध्येय हो गया। ऐसा लगता था, जैसे वह इस प्रतिज्ञा को पूरी करने के लिए ही जी रहा हो।

कैलासवती नगर के राजा के परिवार में एक आदमी था। उसने



एक बार राजा को मारकर स्वयं राजा बनना चाहा था। परन्तु ऐन मौके पर वह पकड़ा गया और उसको देश से निकाल दिया गया। देश से निकाले जाने के बाद भी उसने अपनी कोशिश न छोड़ी। राजा के सामन्तों को अपनी ओर मिलाकर उनसे विद्रोह करवाया। सामन्तों ने जब विद्रोह किया तो उसने भी कुछ सेना के साथ राज्य पर आक्रमण किया।

इन विद्रोही सामन्तों में धृतवर्मा भी था। यह पता लगते ही मन्दहास अपनी सेना के साथ राजा की तरफ से लड़ने गया। मन्दहास का ख़याल था कि कम से कम

धृतवर्मा से मुठभेड़ युद्ध के मैदान में तो हो ही सकेगी।

युद्ध कुछ घण्टों में खतम हो गया। विद्रोही पराजित होकर मैदान छोड़कर भाग गये। उनको पकड़ कर उनका सिर काटने के लिए राजा ने अपने पक्ष के सामन्तों को आज्ञा दी। परन्तु राजद्रोहियों का पीछा करनेवाले सचमुच दो ही तीन थे। औरों को यह क्रूरता-सी लगी।

राजद्रोहियों का पीछा करनेवालों में मन्दहास भी था। पराजित हो मैदान छोड़कर भागनेवालों का पीछा करना उसे भी बुरा लगा। परन्तु वह तो केवल धृतवर्मा का ही पीछा कर रहा था। धृतवर्मा युद्ध में बिना उससे मुकाबला किये ही भाग गया था। मन्दहास की प्रतिज्ञा चाहे कुछ भी हो, वह पूरी न हो सकी।

कई विद्रोही पकड़े गये। उनको मृत्यु दण्ड दिया गया। परन्तु धृतवर्मा का कहीं पता न लगा। मन्दहास उसको, उसके देश छोड़ने से पहले ही पकड़ने की कोशिश कर रहा था।

युद्ध भूमि से भागकर जाते हुए विद्रोहियों का पता ठिकाना हर किसी से मालूम करते



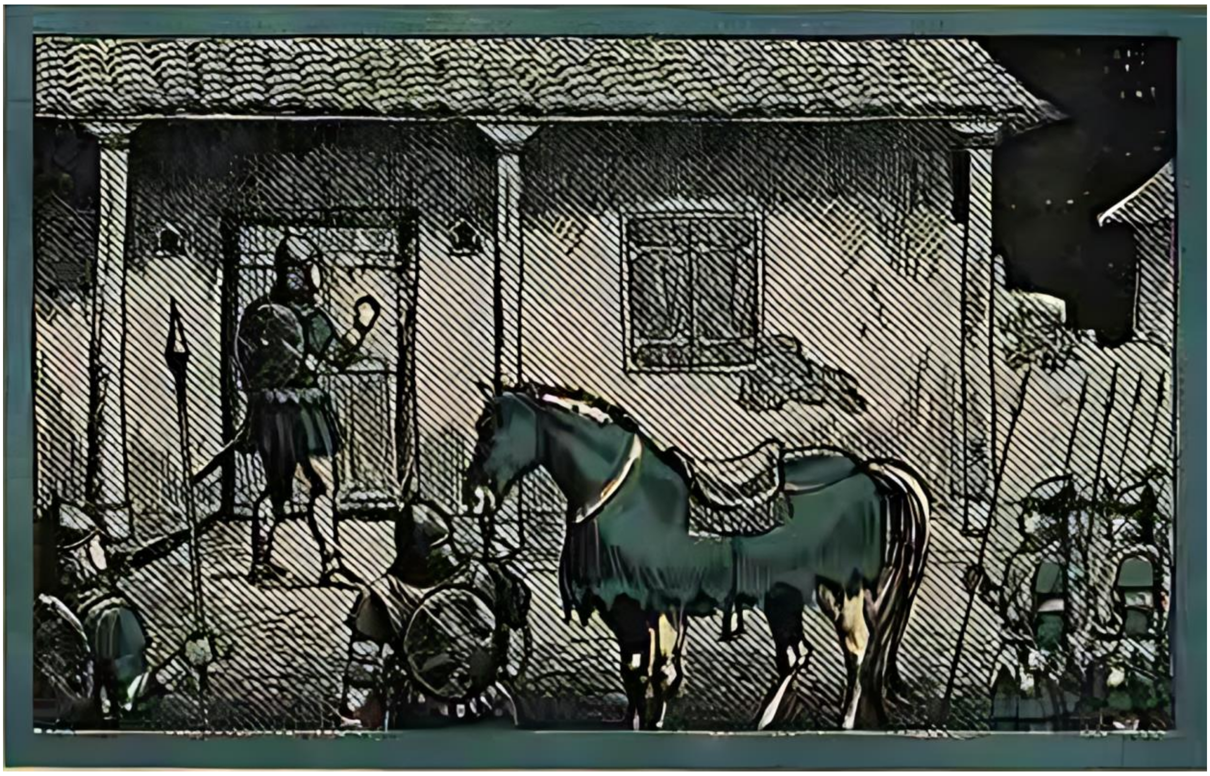
हुए, एक दिन मन्दहास अपने सैनिकों के साथ अन्धेरा होने के बाद एक ग्राम में रुका। वहाँ उसने एक सराय में रात काटने का प्रबन्ध किया। इतने में सराय में जमा हुए मनुष्यों की बातचीत से पता लगा कि कोई विद्रोही गाँव के नुक्कड़ में, एक उजड़े घर में रह रहा था।

झट मन्दहास ने सैनिकों को मशाल लेकर साथ आने की आज्ञा दी। वह तुरन्त वह घर ढूँढ़ने निकल पड़ा। घर आसानी से मिल गया। मन्दहास ने जोर से किवाड़ खटखटाकर पूछा-"कौन है अन्दर?"

एक स्त्री ने किवाड़ खोला। अन्दर कहीं एक दिया टिमटिमा रहा था। मशाल लिये आदमी दूर खड़े थे। इसलिए मन्दहास न जान सका कि किवाड़ खोलनेवाली नीलालक थी। उसका हुलिया भी बिगड़ा हुआ था।

"कौन हैं आप? आपको क्या चाहिए?" उस स्त्री ने पूछा।

"इस घर में कौन है?" मन्दहास ने ऊँची आवाज में पूछा।





"मैं और मेरा लड़का।" नीलालक ने धीमे से कहा। वह मन्दहास की आवाज पहचान कर अपने पति के बारे में डरने लगी थी।

"तो तुम घर छोड़कर चले जाओ, हमें घर जला देना है।" मन्दहास ने कहा। उसका यह कहना था कि सैनिक घर जलाने के लिए मशाल लेकर इधर-उधर दौड़े।

नीलालक भागी भागी अन्दर गई और अपने सोते लड़के को उठा लाई, तभी घर कहीं कहीं जलने लगा था। उसने बाहर आकर कहा-"मेरे पति घायल अन्दर पड़े हैं। अगर आपने जीते जी उनको जला दिया तो आपको क्या मिलेगा? आप उनसे बदला लेना चाहते हैं? मैंने उनसे प्रेम करके शादी की है। चाहें तो आप मेरे प्राण ले लीजिये। यह मेरा लड़का है। अगर मेरा लिहाज न भी करें, तो न कीजिये, कम से कम इस लड़के का लिहाज करके इसके पिता की रक्षा कीजिये।" रोती रोती वह मन्दहास के पैरों पर पड़ गई।

मन्दहास ने नीलालक को पहचान लिया। उसका मन कल्लोलित हो उठा। उसने नीलालक के लड़के को उठाकर चूमा और उसको वापस दे दिया। तालियाँ बजाकर उसने अपने सैनिकों को बुलाकर कहा-"अरे, विद्रोही तो दक्षिण की ओर भाग गया है। तुम उसे पकड़ो, मैं इन्हें किसी के पर रखकर तुम्हारे साथ आ मिलूँगा।"

मन्दहास के सैनिक दक्षिण की ओर गये। फिर मन्दहास जलते घर में घुसा। एक खाट पर असहाय धृतवर्मा पड़ा था। उसको उठाकर वह बाहर लाया। उसे अपने घोड़े पर लिटाकर, स्वयं चलता उत्तर

दिशा की ओर चल पड़ा। नीलालक अपने लड़के को उठाकर उनके साथ-साथ चली।

सवेरा होते-होते वे सीमा पार कर गये। सीमा के पार, एक किसान के घर धृतवर्मा उसकी पत्नी और उसके लड़के की रहने की व्यवस्था करके मन्दहास अपने घोड़े पर, कैलासवती नगर वापस चला आया। उसने सीधे सेनापति के पास जाकर पूछा-"विद्रोही की रक्षा करनेवाले को क्या सजा मिलनी चाहिए ?"

"मरण दण्ड" सेनापति ने कहा।

"तो मुझे मरवा दीजिये। राजा के बिद्रोही धृतवर्मा की मैंने रक्षा की और उसको अभी सीमा पार पहुँचा कर आ रहा हूँ।" उसने कहा।

सेनापति ने आश्चर्य से पूछा-"जो किया सो किया, यह किसी से कहने की क्या जरूरत है? तुम से कौन पूछ रहा है?"

मन्दहास को यह सुन तसल्ली न हुई। उसने राजा के पास जाकर कहा-"महाराज! मैंने राजद्रोही धृतवर्मा की रक्षा की है। मुझे दण्ड दीजिये।" उसने कहा।



राजा ने गुस्से में कहा-"तो इस दुष्ट का सिर कटवा दो।" सेनापति ने कहा-"महाराज! जल्दबाजी न कीजिये। हमारे सामन्तों में से कई, कोई न कोई बहाना करके युद्ध में न आये। यह विद्रोहियों से वीरतापूर्वक लड़ा। युद्ध के बाद बीस से अधिक विद्रोहियों को इसने पकड़ा। केवल एक की रक्षा करने के कारण मृत्यु-दण्ड देना उचित नहीं मालूम होता। अपनी गलती आप बता देने से तो इसकी राजभक्ति और भी स्पष्ट हो जाती है।"

यह युक्ति राजा को जञ्ची। उसने मन्दहास को बिना दण्ड दिये छोड़ दिया।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा-"राजा! मन्दहास का प्रेम अपार था। उसकी राजमक्ति भी अपार थी। इन दोनों की तुलना में, प्रेम की ही विजय हुई, इसलिए ही उसने धृतवर्मा को छोड़ दिया, यह समझा जा सकता है। परन्तु यह करके, अपने प्राण भी देने के लिए तैयार हो गया था, इसलिए मैं सोच नहीं पाता कि उसका प्रेम बड़ा था अथवा उसकी राजभक्ति। अगर तुमने जान बूझकर मेरा सन्देह निवारण न किया तो तुम्हारा सिर टुकड़े टुकड़े हो जायेगा।"

विक्रमार्क ने कहा-"मन्दहास के प्रेम या राजभक्ति में कोई विशेषता नहीं है। अगर उसने सचमुच नीलालक से प्रेम किया था, तो उसके पति को मार डालने की प्रतिज्ञा न करता। उसकी राजभक्ति भी कुछ ऐसी ही थी। युद्ध भूमि में धृतवर्मा को मारने के लिए ही वह राजा की तरफ से लड़ा था। अगर धृतवर्मा राजा की तरफ होता तो वह विद्रोहियों की तरफ से लड़ता। मन्दहास में आत्माभिमान था। जब नीलालक ने उससे प्रेम न करके भृतवर्मा से प्रेम किया, तो उसके आत्माभिमान को धक्का लगा। इसलिए ही उसने धृतवर्मा को मारने की प्रतिज्ञा की। क्योंकि वह नीलालक की दृष्टि में नीचा नहीं होना चाहता था, इसलिए ही उसने धृतवर्मा की रक्षा की। क्योंकि उसके आहत आत्माभिमान की ठीक प्रतिक्रिया न हुई थी, इसलिए उसने स्वयं बलि हो जाना चाहा।"

राजा का इस प्रकार मौन भङ्ग होते ही बेताल शव के साथ अदृश्य हो गया और पेड़ पर जा बैठा।

(कल्पित)





शीघ्र ही विशाख का अपने ससुर से झगड़ा हुआ।

मिगार, निघण्ट नामक तीर्थक स्वामी का शिष्य था। उसने एक दिन अपनी बहू से कहा-"चलो, पूजा के लिए चलें।" विशाख ने अच्छे अच्छे कपड़े पहने, गहने पहने और वह ससुर के साथ चल दी। परन्तु यह जानते ही कि वे दिगम्बर स्वामी की पूजा करने जा रहे थे, उसे बहुत बुरा लगा। "मुझे आप ऐसी जगह क्यों लाये?" उसने पूछा।

तीर्थक को गुस्सा आया-"देखा, तुम अपने लड़के के लिए कैसी पत्नी लाये हो! यह बुद्ध की अनुयायी तेरे कुटुम्ब का सर्वनाश करके रहेगी। इसे तुरन्त भिजवा दो।" उसने कहा।

"वह छोटी बच्ची है। उसे कुछ नहीं मालूम। क्षमा कीजिये।" मिगार ने तीर्थक से निवेदन किया।

एक बार मिगार के घर भिक्षापात्र लेकर एक अर्हत आया। विशाख ने उससे कहा-"इस घर का मालिक जूठन खाता है, आप



किसी और घर में माँगिये।" यह मिगार ने सुना। उसने गुस्से में अपनी बहू से कहा-"तुम हमारे घर से चली जाओ।"

"जब जाने के लिए कहो तो जानेवाली, आने के लिए कहो तो आनेवाली मैं आपकी कोई दासी नहीं हूँ। मेरे साथ मेरे पिता ने आठ रक्षकों को भेजा था। उनको बुलबाइये।" विशाख ने कहा।

रक्षक आये। मिगार ने उनसे कहा- "मेरी बहू ने मेरा अपमान किया है।"

"मैने कहा था कि मेरे ससुर जूठन खाते हैं, मेरा मतलब यह था कि जन्म परम्परा में किये गये कर्म को वे भोग रहे हैं।" विशाख ने कहा।

यह सुन मिगार का गुस्सा ठण्डा हुआ। उसको तसल्ली हुई।

"अच्छा, मेरे दास दासियों को बुलवाइये। मैं इस घर में नहीं रहना चाहती। चली जाऊँगी।" विशाख ने कहा।

"यह क्या? जाओ मत। हमारे घर ही रहो।" मिगार ने बहू को मनाने का प्रयत्न किया।

"आप नास्तिक हैं। मैं बुद्ध की शिष्या हूँ। यदि मुझे बुद्ध के उपदेश सुनने का अधिकार दिया गया तो मैं इस घर में रहूँगी।" विशाख ने कहा।

मिगार इसके लिए मान गया। इसके कुछ दिनों बाद विशाख ने बुद्ध और उनके अनुनरों को अपने घर भिक्षा के लिए बुलाया। यह बात तीर्थक को मालूम हुई। उसको डर लगा कि यदि उसने बुद्ध के एक बार दर्शन कर लिये, तो वह उसकी ओर न देखेगा। उसने मिगार से कहा-"जब बुद्ध तुम्हारे घर भोजन के लिए आये तो तुम घर में न रहकर कहीं चले जाना।"

"मैं आपकी बात न मानूँगा। मेरी बहू विशाख बहुत समझदार है। मैं उसके कहे पर ही चलूँगा।" मिगार ने कहा।

"तुम में थोड़ी-सी भी अक्ल नहीं है। अगर तुमने बुद्ध को देखा तो नरक जाओगे। चाहो, तो तुम उसके उपदेश सुनो। पर देखना मत। आँखों पर पट्टी बाँध लो।" तीर्थक ने कहा।

उनकी सलाह के अनुसार जब मिगार बहू के साथ बुद्ध के दर्शनार्थ गया, तो उसने आँखों पर पट्टी बाँध ली। पर बुद्ध की बातें सुनते सुनते उसे इस प्रकार का आनन्द हुआ कि उसने आँखों की पट्टी उतार फेंकी और बुद्ध के दिव्य रूप को देखा। उसने विशाख की ओर मुड़कर कहा-"माँ, अब से मुझे तुम अपने पुत्र की तरह देखना, मेरी रक्षा करना।"

उसने बुद्ध के पास जाकर कहा- "स्वामी, आप ही मेरे एक मात्र शरण हैं। मैं अपनी चालीस करोड़ की सम्पत्ति आपकी सेवा में लगा दूँगा। बुद्ध को समर्पित कोई भी वस्तु व्यर्थ नहीं जाती।"



उसके बाद मिगार के घर सिवाय बौद्धावलम्बियों के किसी और के लिए स्थान न था। क्योंकि विशाख ने मिगार की बुद्धि बदल दी थी, इसलिए लोग उसको "मिगार माता" कहने लगे। बुद्ध की शिष्याओं में यह सबसे बड़ी माने जाने लगी।

विशाख रोज तीन बार विहार जाया करती। सवेरे भोजन वगैरह ले जाती। सायंकाल फूल और दीप ले जाती। बुद्ध का नियम था कि स्त्रियों को वर नहीं दिये जाने चाहिए। फिर भी बौद्ध धर्म की वृद्धि के लिए उन्होंने विशाख की इच्छाओं का समर्थन किया। उसने उनसे आठ वर माँगे। वे यों थे: बुद्ध के पास



आनेवाले दर्शनार्थियों को उनके घर भेजना, उसके जीवन पर्यन्त पाँच सौ भिक्षुयों का उसके घर भोजन करना, रोगियों की उसके द्वारा सहायता किया जाना। प्रति वर्ष पाँच सौ भिक्षुयों को उनके लिए आवश्यक वस्त्रादि बस्तुओं का देना, आदि।

बीस वर्षों में विशाख के बीस बच्चे हुये। उनमें दस लड़के और दस लड़कियाँ थीं। इतनी सन्तान के होने पर भी उसका स्वास्थ्य ठीक था। जब श्रावस्ती राजा को बताया गया कि उसमें पाँच हाथियों का बल था, तो उसने विश्वास न किया। एक बार उसके सामने से आते हुए उसने अपना हाथी उस पर चढ़ा दिया। मगर जब विशाख ने उसकी सूँड़ पकड़ कर मरोड़ी तो यह दर्द से चिल्लाता चला गया।

कुछ समय बाद विशास्ख ने अपने पिता के दिये हुए गहनों को बेचकर विहार बनाने का निश्चय किया।

परन्तु उन गहनों को खरीद सकनेबाला रईस श्रवस्ती में कोई न था। फिर भी उसने नगर के पूर्व में एक बाग खरीदा। और बहुत-सा धन लगाकर वहाँ विहार बनवाया। क्योंकि यह पूर्व में था, इसलिए उसका नाम पूर्वाराम रखा गया। इस विहार के समर्पण के अवसर पर बुद्ध ने कहा-"आज विशाख के पास जो सम्पत्ति है, बल है, सौभाग्य है, वह उसके पूर्व जन्मों के सत्कायों का फल है।"

* * * *

शुद्धोधन का एक भाई था, जिसका नाम अमितोदन था। उसके महानम और अनुरुद्ध नाम के दो लड़के थे। रोहिणी नाम की लड़की थी। अनुरुद्ध को लौकिक ज्ञान बिल्कुल न था।

जब वह सात वर्ष का था तो दो राजकुमारों से उसने कोई खेल खेला। उस खेल में हारनेवाले को दूसरों को चावल की रोटी देनी थी। पहले खेल में अनुरुद्ध हार गया। उसने अपनी माँ को खबर भिजवाकर बाकी दोनों को चावल की रोटी दिलवाई। फिर खेल खेला गया, फिर अनुरुद्ध हार गया। इस तरह वह तीन बार हारा। और तीनों बार उसने माँ के यहाँ से रोटियाँ मँगवाकर उनको दीं, जब उसका लड़का चौथे खेल में भी हार गया, और उसने रोटी के लिए खबर भेजी, तो माँ ने नौकर से कहा-" कहो कि अब नहीं है।" ताकि वह यह समझ सके, उसने साथ एक खाली गिन्नी भी भेज दी।

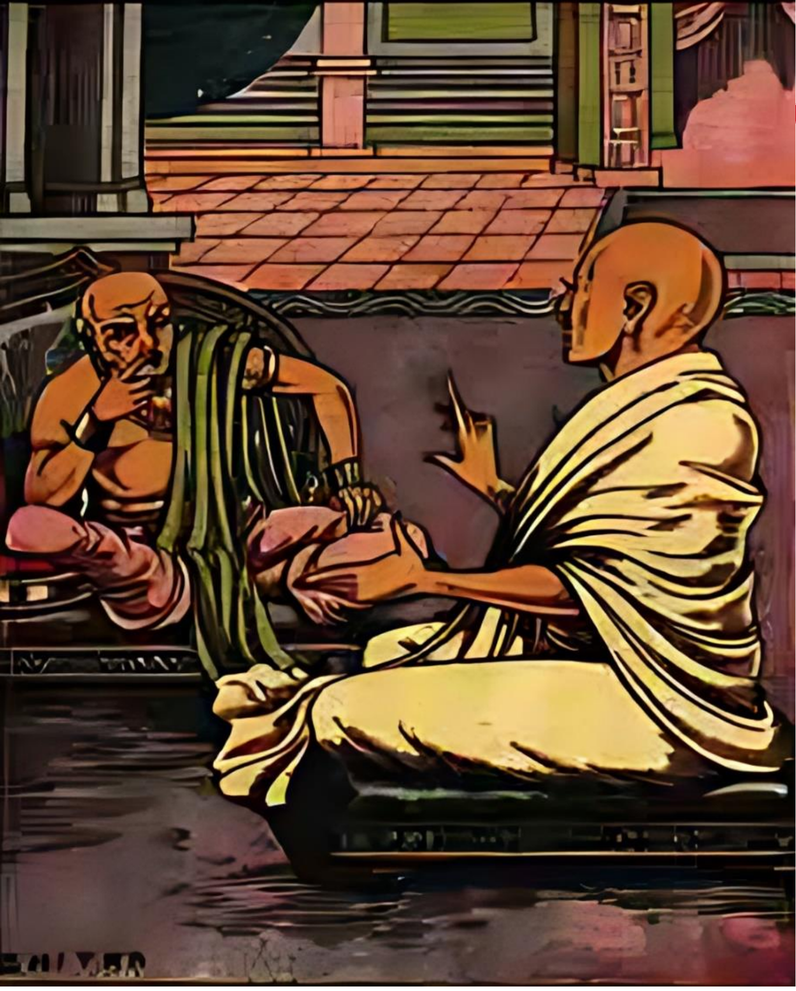
जाने कहाँ से उस गिन्नी में एक रोटी आ गई, न मालूम उसको किसने वहाँ रखा था। नौकर ने वह गिन्नी अनुरुद्ध को देते हुए कहा-"अब नहीं है!" अनुरूद्ध ने गिन्नी का ढकन उठाकर देखा तो उसमें उसने एक नये रङ्ग की रोटी देखी। क्योंकि लौकिक ज्ञान न था, इसलिए उसने सोचा कि शायद उस रोटी



का नाम ही 'अब नहीं है' था। जब रोटी खाई तो वह चावल की रोटी से बहुत अधिक स्वादिष्ट थी।

अनुरूद्ध ने जाकर माँ से कहा-"माँ, तुमने कभी मुझे....'अब नहीं है' रोटी नहीं दी।" माँ को अचरज हुआ। अनुरुद्ध को लौकिक ज्ञान न था, यह उसका एक उदाहरण है। वह इसी तरह बड़ा हुआ।

अनुरुद्ध के साथी, नौकर वगैरह भी, मालूम होता है, इसी तरह बड़े हुए। जब उसकी आयु पन्द्रह वर्ष की थी तो उसमें, भद्री और किम्बिल में वाद-विवाद हुआ। चावल किसमें से निकलते हैं?



"बाली में से।" किम्बिल ने कहा। उसका मतलब चावल को धोनेवाले बर्तन से था।

"नहीं, वह सोने के थाल में से निकलता है।" अनुरुद्ध ने कहा। उसका मतलब चावल परोसे जानेवाले सोने के थाल से था। अनुरुद्ध जब इस नादान अवस्था में था, तो बुद्ध ने खबर भेजी कि प्रति शाक्य कुटुम्ब से उनके पास एक एक को भेजा जाये। अमितोदन के कुटुम्ब में से या तो महानम को जाना था नहीं तो अनुरुद्ध को। महानम सन्यासी न होना चाहता था। वह राज्य के सुख भोगना चाहता था। यही नहीं अनुरुद्ध जैसा भोन्दू राज्य कार्य के योग्य भी न था। इसलिए महानम ने अनुरुद्ध को सन्यासी होने के लिए प्रेरित किया। "चावल कहाँ से निकलता है?" वाद-विवाद ने उसको यह करने का अवसर दिया।

महानम ने अनुरुद्ध से कहा-"तुम इतना भी नहीं जानते कि चावल कहाँ से आता है? किसान ज़मीन जोत कर उसे पैदा करते हैं। खेती करने के लिए हल, फावड़ा, खुरपे आदि अट्ठारह उपकरण चाहिए। खेतों में नालियाँ बनानी होती हैं, मुँडेरे बनानी होती हैं। खाद डालना होता है, फिर अंकुर बनाये जाते हैं। उन्हे बोया जाता है। उनकी निलाई करनी होती है। कहीं चूहे, सूअर आदि फसल न खा जाये इसलिए उनकी रक्षा करनी होती है। मचान में बैठकर पक्षियों को भगाना होता है। यह नौ महीनों का काम है और जब फसल कट जाती है तो मजदूर, नाई, धोबी वगैरह को देना होता है, जो कुछ बचता है, उससे पुराना ऋण चुकाना होता है। बीज के लिए कुछ रखना होता है। जो कुछ बच रहा

उसे खाया जाता है। फिर दुबारा फसल आने तक उसी से गुजारा करना होता है।

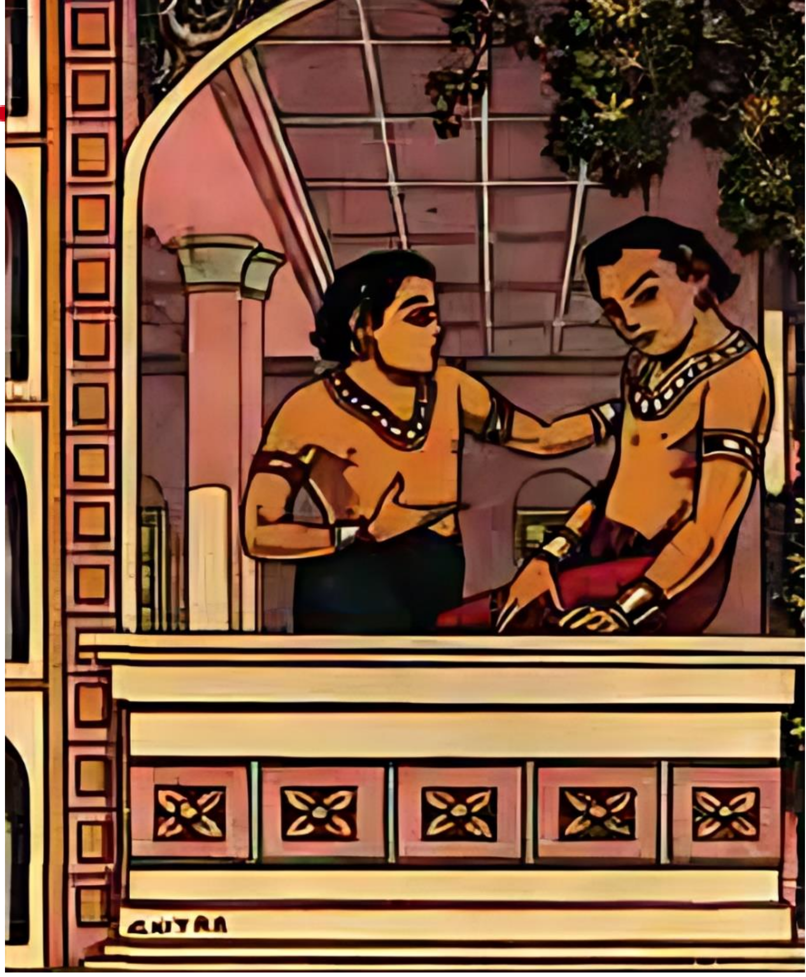
"तो चावल के निकालने के लिए इतनी मेहनत करनी होती है?" अनुरुद्ध ने पूछा।

"सिर्फ यही न? कभी कभी मजदूर बीमार पड़ जाते हैं। अगर मौसम ठीक न रहा तो फसल खराब हो जाती है। खेती करनेवाले को किसी भी प्रकार का सुख नहीं है। इसलिए मैं यह खेती बाड़ी नहीं करना चाहता। मैं बुद्ध के पास चला जाऊँगा।" महानम ने कहा।

"भैया, मैं खेतीबाड़ी के बारे में कुछ भी नहीं जानता। मुझे बुद्ध के पास जाने दो। तुम खेती बाड़ी देखो।" अनुरुद्ध ने भाई से विनती की। महानम यह ही चाहता था। अनुरुद्ध ने अपनी माँ के पास जाकर कहा- "माँ, मैं बुद्ध के पास चला जाऊँगा। तुम अपनी अनुमति दो।"

"तुम्हारे पिता तो गुजर गये। तुम दोनों मेरे लिए दो आँखों के समान हो। तुम में से अगर एक भी गया तो मैं अन्धी हो जाऊँगी।" माता ने कहा।

अनुरुद्ध ने बार बार उनकी अनुमति माँगी। माता ने सोचा कि



अनुमति यदि सर्वथा न दी गई तो लड़के के मन को धक्का पहुँचेगा। "बेटा, जब तुम बार-बार जाने के लिए कह रहे हो तो मैं भी क्या कह सकती हूँ? भद्री अगर बुद्ध का शिष्य होना चाहे तो तुम भी जाना।" माँ ने कहा। भद्री तब ही राज्य कार्य देखने लगा था, वैसा लड़का कभी सन्यास न लेगा, यह अनुरुद्ध की माँ का विचार था।

अनुरूद्ध ने भद्री को सूझबूझ से मनाने का निश्चय किया। शाक्य वचन देखर मुकरते नहीं थे। अगर किसी तरह भद्री को सन्यास के लिए मना लिया गया तो उसके

बाद वह प्राण दे देगा, पर वचन देकर न मुकरेगा।

अनुरूद्ध भद्री के पास गया। उसको आलिङ्गन करके उससे कहा-"मैं तुम्हें इतना प्यार कर रहा हूँ, अगर कभी मैंने सन्यास ले लिया, तो मेरे साथ रहने के लिए तुम सन्यास ले लोगे?"

भद्री को स्वप्न में भी न सूझा था कि अनुरुद्ध ने सन्यास ग्रहण करने का निश्चय कर लिया था। उसने यूँही कह दिया-"अगर तुमने सन्यास लिया तो मैं भी सन्यासी हो जाऊँगा।" उसने कहा।

अनुरूद्ध फूला न समाया। उसने कहा-"मैं अभी सन्यासी होने जा रहा हूँ। तू भी मेरे साथ जा।"

भद्री चकित रह गया। "अरे, अभी हम लड़के हैं। बहुत से भोग विलास हैं, जिनका हमें भोग करना है। सन्यासी होने की क्या जल्दी है? बुढ़ापा आने पर सन्यास ले लेंगे।" उसने कहा।

"क्या कहीं लिखा है कि बुढ़ापा के बाद ही मौत आती है? क्या सब बूढ़े होकर ही मर रहे हैं? सन्यास को बुढ़ापे के साथ जोड़ना ठीक नहीं है। सिद्धार्थ ने उनतीस वर्ष की उम्र में ही सन्यास ले लिया था। हमारे देश में कितने ही क्षत्रियों ने यौवन में सन्यास ले लिया था। इसलिए तुम भी मेरे साथ चले आओ।" अनुरुद्ध ने कहा।

"तो फिर मुझे सात साल का समय दो। तब सन्यास ले लेंगे।" भद्री ने कहा। लेकिन अनुरुद्ध न माना। परन्तु जब भद्री समय के लिए भाव-ताव करने लगा तो उसने उसको सात दिन का समय दिया।

(अभी है)



CHANDAMAMA (Hindi) November 1959 Regd. No. M. 5452

